ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

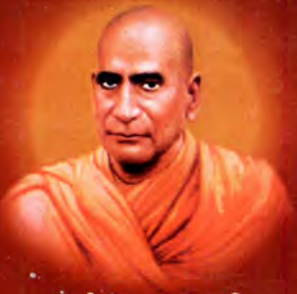

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

आषाढ़ वि. स. २०७३ • कलियुगाब्द ५११८ • वर्ष : ०४ • अंक : ७ • जुलाई २०१७

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी एवं प्रधान कुलवंत सिंह सैनी के कुशल मार्गदर्शन में 5-5 दिवसीय आर्यवीर / आर्य वीरांगना योग एवं जीवन-निर्माण शिविरों का आयोजन दिनांक 1 से 5 जून तथा 7 से 11 जून 2017 तक किया गया। आर्य वीरांगना योग एवं जीवन-निर्माण शिविर के समापन-समारोह में भाजपा प्रदेश प्रभारी डॉ. अनिल जैन जी 'मुख्य-अतिथि' के रूप में पधारे। वहीं आर्यवीर योग एवं जीवन-निर्माण शिविर के समापन-समारोह में विश्व हिन्दू परिषद् के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्याम जी गुप्त मुख्य अतिथि रहे। दोनों समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

स्वामित्व :

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

AN ISO 2008 CERTIFIED INSTITUTE

आर्य वीरांगना योग एवं जीवन-निर्माण शिविर की झलकियाँ

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

'सम्पादक परिवार'

संरक्षक : आचार्य देवव्रत
(महामहिम राज्यपाल, हि. प्र.)
मुख्य संपादक : कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक : विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक : शमशेर सिंह
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश
सूबेप्रताप आर्य
सुखविन्द्रपाल आर्य
नंदकिशोर आर्य
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक: राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक: यशवीर आर्य
: अशोक कुमार

आवश्यक सूचनाएं

1. '**गुरुकुल दर्शन**' मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

– संपादक

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : राष्ट्र-निर्माण में गुरुकुल के बढ़ते कदम	02
2.	दूध का कर्ज : एक चिन्तन	03
3.	गृहस्थ-आश्रम	04
4.	आर्यसमाज सर्वोत्तम सामाजिक संस्था है	06
5.	भारत में गौ-हत्या पर लगे पूर्ण प्रतिबन्ध	08
6.	ईश्वर को कभी मत भूलो	09
7.	बुजुर्गो का सम्मान कर भविष्य सुधारें	10
8.	दलित-उत्थान का प्रेरणादायक संस्मरण	11
9.	कन्या भ्रूण-हत्या : एक अभिशाप	12
10.	शील उड़ाती चली हवा, मानव मानवता भूल गया	13
11.	रसो वै सः	15
12.	मंत्रों का करें विशुद्ध उच्चारण	17
13.	चल उड़ जा रे पंछी	18
14.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ	19
15.	सण्डे हो या मण्डे, कभी ना खाओ अण्डे	20
16.	देश में बढ़ते दुष्कर्म और आडम्बर	21
17.	योगिराज श्रीकृष्ण और कर्ण संवाद	22
18.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।

संपादकीय

राष्ट्र-निर्माण में गुरुकुल के बढ़ते कदम

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्र-निर्माण और युवाओं के चरित्र-निर्माण के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण संगठन है। वर्तमान परिवेश में यदि युवाओं को सही दिशा देकर समाज और राष्ट्र की उन्नति कोई कर सकता है तो वह एकमात्र आर्यसमाज है। आर्यसमाज केवल वैदिक ज्ञान और वेदवाणी को मानता है और उसी के आधार पर समाज से पाखण्ड और अज्ञानता के अंधकार को मिटाने के लिए प्रयासरत है। वैदिक ज्ञान को ग्रहण करके ही श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों ने समस्त मानवजाति का कल्याण व उद्धार किया और वैदिक परम्परा को आगे बढ़ाया।

समाज में बढ़ते अंधविश्वास, पाखण्ड, अज्ञानता को मिटाने के लिए पुन: लोगों को वेदों के मार्ग पर लौटना होगा। इस दिशा में गुरुकुल कुरुक्षेत्र उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। हमारे घरों से गायब हुए संस्कारों, गिरते हुए मानवीय मूल्यों और टूटती परम्पराओं को संजोने के लिए **गुरुकुल कुरुक्षेत्र** वचनबद्ध है। साथ ही समाज में फैली नशाखोरी, कन्या भ्रूण-हत्या, भेदभाव, जातिवाद, क्षेत्रवाद, दहेज-हत्या, गुरुड़म जैसी कुरीतियों को समाप्त करने तथा आपसी भाईचारे को मजबूत करने के लिए, नारी शक्ति को आत्मनिर्भर बनाने और युवाओं में राष्ट्रप्रेम की भावना पैदा करने का कार्य कर रहा है।

इसी उद्देश्य से **गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना दलों के शिविरों** का सफल आयोजन किया गया। पहला शिविर 1 से 6 जून तक लगा जिसमें लगभग **1600 आर्यवीरों** ने योगासन, जूड़ो-कराटे, लाठी चलाना, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, भूमि नमस्कार, सूर्य नमस्कार आदि प्रशिक्षण लिया। उसके पश्चात् 7 से 11 जून तक आर्य वीरांगनाओं का शिविर लगा जिसमें **1200 आर्य वीरांगनाओं** ने विभिन्न प्रशिक्षण प्राप्त किया। आर्यवीर योग एवं जीवन निर्माण शिविर समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री **श्याम जी गुप्त**, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद् नई, दिल्ली तथा विशिष्टि अतिथि विजय कुमार जी, प्रान्त प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और **मा. रामपाल आर्य**, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा रहे। वहीं आर्य वीरांगना योग एवं जीवन निर्माण शिविर का समापन समारोह महामहिम **राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी** के विशेष सान्निध्य में सम्पन्न हुआ जिसके मुख्य अतिथि **डॉ. अनिल जैन**, हरियाणा प्रभारी भाजपा रहे तथा मा. रामपाल आर्य विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

इन शिविरों में शारीरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ युवाओं को उनके जीवनोपयोगी महत्त्वपूर्ण जानकारी भी दी गई। उनके चरित्र निर्माण में सहायक विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई और आर्य विद्वानों द्वारा उनकी शंकाओं का भी निवारण किया गया। इन शिविरों के माध्यम से गुरुकुल कुरुक्षेत्र में जहाँ **50 शिक्षक तैयार हुए वहीं 70 शिक्षिकाएं** भी तैयार की गई जो गांव-गांव में युवाओं को वैदिक सभ्यता-संस्कृति का संदेश देने के साथ-साथ उन्हें योगासन, हवन, सन्ध्या, प्राणायाम करने के लिए प्रेरित करेंगी।

निश्चित तौर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित इन आर्यवीर / आर्य वीरांगना योग एवं जीवन निर्माण शिविरों से समाज में एक जागृति आएगी और समाज में फैली बुराई व कुरीतियों का दमन होगा। इन शिविरों में आए युवा अपने घरों, मोहल्लों व आसपास के क्षेत्रों में फैली बुराइयों को समाप्त करने में अहम भूमिका अदा करेंगे साथ ही अज्ञानतावश जो लोग पाखण्ड व आडम्बरों के जाल में फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं, उन्हें सच्चाई का आइना दिखाकर सद्मार्ग पर लाएंगें।

इन शिविरों में नन्दकिशोर आर्य, भोपाल सिंह आर्य, संजीव आर्य, जयपाल आर्य, जसविन्द्र आर्य, समरपाल आर्य, चन्द्रपाल आर्य, सचिन आर्य, विशाल आर्य, आर्यमित्र आर्य, जयराम आर्य, पंकज आर्य, राजकुमार आर्य, प्रवीण आर्य, पंकज आर्य, रोहित आर्य, जगदीश आर्य, महिन्द्र आर्य, सहित आचार्या अमरकौर, बहन संतोष आर्या, बहन नीलम आर्या, सरिता आर्या, नेहा आर्या, योगेश आर्या, विशाखा आर्या, सुजाता आर्या, दिव्या आर्या, ज्योति आर्या आदि जिसने भी प्रशिक्षण व बौद्धिक शिक्षा दी है, उन सभी का मैं धन्यवाद करता हूं और भविष्य में भी उनके सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

मैं आर्यवीर योग एवं जीवन निर्माण शिविर तथा आर्य वीरांगना योग एवं जीवन निर्माण शिविर के सफल आयोजन पर समस्त वेद प्रचार विभाग एवं गुरुकुल परिवार को बधाई देता हूँ और परम पिता परमेश्वर से कामना करता हूँ कि जिस उद्देश्य से इन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, उसमें सफलता प्राप्त हो। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार हो, युवा वर्ग में बढ़ते अपराधों व नशाखोरी की गंदी आदतों पर अंकुश लगे तथा वेदों के जिस ज्ञान को लोग भूल चुके हैं, उसे पुन: प्राप्त कर देश को फिर से विश्वगुरु बनायें।

- कुलवंत सिंह सैनी

जो धर्म मानव की अन्र्थों की रक्षा नहीं कर सकता, वह धर्म निरर्थक है।

एक चिन्तन : दूध का कर्ज

कत्लखाने के बाहर खूंटे से बंधी गाय ने पास खड़े अपने बछड़े से कहा कि बेटा आज रात में मेरा जितना दूध पीना चाहे पी ले, क्योंकि कल सूर्योदय के साथ ही कसाई मेरी हत्या कर मेरे शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर उसे डिब्बे में भरकर विदेश भेज देंगे। इतना सुनकर बछड़े ने अपनी माँ से कहा कि माँ आखिर वे ऐसा क्यों करेंगे, जबकि तुमने तो अपना दूध उन्हें पिलाया है?

इस पर गाय ने जवाब दिया हाँ, हमने तो अपना दूध सभी को बिना भेदभाव के पिलाया है। उस कसाई को भी जो कल सुबह हमारा कत्ल करेंगे। मेरा दूध पीकर ही वे बल, विद्या, बुद्धि और शक्ति अर्जित कर पाये हैं, पर बेटा वे मनुष्य हैं उन्हें मनुष्य इसलिए कहा गया है, क्योंकि वे मननशील हैं पर उनमें अब मनन करने की शक्ति ही समाप्त हो गई है, इसलिए वे कुछ भी नहीं कर सकते।

इतना सुनकर बछड़े ने कहा कि क्या इसीलिए वे मुझे भी यहाँ लाए हैं। उन्हें हमारे बचपन पर भी कुछ तरस हीं आया, मैं तो तैयार हो रहा था हल चलाकर उनके खेतों की फसलों को लहलहाने के लिए। तब गाय ने कहा कि बेटा उसके कई कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि अब उन्हें खेती के लिए तुम्हारी जरूरत नहीं रह गयी है, क्योंकि तुम्हारा स्थान ट्रैक्टर ने ले लिया है और दूसरा कारण यह है कि वे तुम्हारे कोमल और मुलायम चमड़े से क्रूम के जूते बनाकर अधिक मुनाफा अर्जित करेंगे और तीसरा व सबसे बड़ा कारण यह है कि तुम बछड़ी नहीं बछड़ा हो, अगर तुम बछड़ी होते तो वे तुम्हें हरगिज यहाँ नहीं भेजते, बल्कि बड़े ही लाड़ प्यार से तुम्हें पालते ताकि तुम्हारे दूध और बच्चों का लम्बे समय तक वे व्यापार कर सकें क्योंकि वे बहुत ही स्वार्थी हैं। चन्द पैसों की लालच में तुम्हें भी यहाँ भिजवा दिया है।

तब बछड़े ने निराश होकर पूछा माँ क्या हमारी कोई सुनने वाला नहीं है? गाय ने कहा कि नहीं हमारी कोई सुनने वाला नहीं है क्योंकि मानवाधिकार आयोग जैसा हमारा कोई आयोग नहीं है और न ही कोई न्यायालय ऐसा है जहाँ पर हम अपनी फरियाद कर सकें। हाँ, एक न्यायालय ऐसा जरूर है जहाँ हमारी फरियाद भी सुनी जाएगी और दोषी दण्डित भी किये जाएंगे। तब बछड़े ने एक बार फिर पूछा कि अच्छा यह तो बताओ कि क्या इसका दुष्परिणाम उन्हें कुछ भी नहीं मिलता?

इस पर गाय ने कहा कि दुष्परिणाम मिलता क्यों नहीं, अवश्य मिलता है। दुनिया के सभी प्राणी अपना-अपना स्वाभाविक आहार ही खाते हैं, दूसरा कुछ भी नहीं पर एकमात्र मनुष्य ही है जो अपने स्वाभाविक आहार के अलावा बड़ी तेजी से मांसाहार की ओर प्रवृत्त हो रहा है, हम तो केवल एक बार कत्ल किये जाएंगे पर उन्हें तो लम्बे समय तक नरक जैसी यातना भोगनी पड़ रही है।

आज का मनुष्य मुर्गियों का खून पीकर अपना खून बढ़ाना चाहता है और हम जैसे जानवरों के मांस को खाकर अपनी ताकत बढ़ाना चाहता है पर उन्हें मिलता क्या है? इन्हीं सब चीजों को खाकर वे नित नए-नए रोगों से ग्रसित हो जाते हैं और अल्पायु में ही मृत्यु को भी ग्रास बन जाते हैं। वेद ने मनुष्य को 100 वर्ष जीने का अधिकार दिया है पर प्रकृति के विरूद्ध आचरण करने से वे कम समय तक ही जी पाते हैं। आज स्थिति क्या है स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन का मूल आधार है शाकाहार, पर वे जिस तेजी से मांस-भक्षण करके नए-नए रोगों की चपेट में आ रहे हैं, उसी के कारण सभी अस्पताल भरे पड़े हैं। डॉक्टरों के यहाँ रोगियों की लम्बी-लम्बी लाइनें लगी हुई हैं और इससे बहुत बड़ी संख्या में लोग अपने घरों में मृत्यु शयया पर पड़े मौत का इंतजार कर रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी चेतावनी दी है कि मनुष्य के शरीर में होने वाली बीमारियों में से 151 गम्भीर बीमारियाँ ऐसी है जिसका कारण मांसाहार है। गाय जैसे जीवों की बहुत बड़े पैमाने पर हत्या होने की वजह से बच्चे दूध के बिना बिलख रहे और कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। आज पूरे विश्व में भूख और कुपोषण की वजह से 5 वर्ष तक के बच्चों की मृत्यु 40 हजार प्रतिदिन हो रही है, फिर भी विश्व स्वास्थ्य संगठन की इस चेतावनी का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है, आखिर क्यों? मतलब साफ है चाहे जो भी भोगना पड़े पर वे अपने लाइफ स्टाइल में कोई परिवर्तन नहीं चाहते। तब बछड़े ने अपनी माँ से पूछा कि इतना सबकुछ देखकर भी तुम्हें उनसे शिकायत नहीं है? गाय ने जवाब दिया कि नहीं मुझे उन पर तरस अवश्य आता है पर कोई शिकायत नहीं है क्योंकि मैं गौमाता हूँ। विधाता ने मुझे विश्व की माता का दर्जा दिया है इसलिए मैं मरकर भी उनका कल्याण चाहती हूँ। जब वे औलाद की हत्या बेझिझक कर सकते हैं तो कुछ भी कर सकते हैं। आज प्रतिदिन लाखों की संख्या में वे अपनी संतान की हत्या बिना जन्म लिये ही गर्भ में ही करा देते हैं, तो फिर भला मैं कौन हूँ?

हाँ, मुझे शिकायत है उन कथित गो-भक्तों से जो गौ माता की जय जैसे नारों से पूरे वातारण को गुंजायमान करते हैं, मंदिरों में स्थापित मेरी मूर्तियों पर अक्षत और फूल चढ़ाने से नहीं थकते, वे भी मुझे कत्लखानों तक भिजवाने में नहीं हिचकिचाते। क्या यही है मेरे दूध का कर्ज, जिसे वे इस प्रकार चुका रहे हैं। बुद्धिजीवी पाठकों! गाय और बछड़े के इस संवाद से कुछ शिक्षा लेकर गो-हत्या के विरूद्ध आवाज उठाओ और उसके दूध का कर्ज अदा करने का थोड़ा प्रयास करें।

- राजेन्द्र प्रसाद आर्य,
प्रचार मंत्री, आर्य समाज मुजफ्फरपुर, बिहार

जिस पक्ष में धर्म होता है, उस पक्ष की ही विजय होती है।

गृहस्थ धर्म

*ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों का अपने-अपने स्थान पर विशेष महत्त्व है। इनमें से कोई भी उपेक्षणीय या ग्रहणीय नहीं है। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि अर्थ और काम के सेवन का सम्बन्ध अन्य तीनों आश्रमों में न होकर केवल गृहस्थाश्रम के साथ हैं वय, तप, त्याग और अहर्निश परोपकार-परायण जीवन बिताने के कारण संन्यास का दर्जा बेशक सबसे ऊँचा है किन्तु ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये तीनों आश्रम जिस एक आश्रम की बदौलत चल पाते हैं, वह केवल गृहस्थ आश्रम है। '**गुरुकुल-दर्शन**' के पाठकों हेतु आचार्य रामदेव जी द्वारा लिखित '**गृहस्थ धर्म**' में वर्णित ज्ञान को पहुँचाने के लिए इस श्रृंखला को आरम्भ कर रहा है जिससे पाठक गृहस्थ धर्म से जुड़े अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में जान सकें।*

लेखक परिचय : आचार्य रामदेव जी का जन्म 31 जुलाई 1881 को ग्राम बजवाड़ा (महात्मा हंसराज जी का गांव), होशियारपुर में हुआ था। इन्होंने व्यक्तिगत रूप से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंग्रेजी मुखपत्र 'आर्य पत्रिका' का सम्पादन किया। आचार्य जी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रौढ़ लेखक, वक्ता और विद्वान् थे। उनकी टक्कर का व्याख्याता और विद्वान् विरला ही पैदा होता है। आपने जालंधर छावनी स्थित विक्टर हाईस्कूल में हैड मास्टर के पद को सुशोभित किया, साथ ही जींद में विद्यालय निरीक्षक के रूप में भी कार्य किया। महात्मा मुंशीराम जी के अनुरोध पर आप गुरुकुल कांगडी को जीवन दान करके गुरुकुल के हो गये और 1936 में आप स्वर्ग सिधारे। 'गृहस्थ-धर्म' में आपने गृह्यसूत्रों के आधार पर गृहस्थ धर्म का जैसा सांगोपांग विवेचन किया है, वह न केवल पठनीय है, बल्कि सही दिशा दिखाने वाला है। वैदिक धर्म ने गृहस्थ धर्म के पालन के लिए जैसा निर्देश दिया है, उसके अनुसार यदि समस्त मानव जाति आचरण करने लग जाए तो निस्सन्देह वह आज की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी होगी।

गतांक से आगे... गृहस्थ काअपना कोई भी समय (चाहे प्रातः दोपहर व सन्ध्या ही क्यों न हो) कभी भी व्यर्थ नहीं खोना चाहिए, प्रत्युत अपनी योग्यतानुसार प्रत्येक समय से लाभ उठाना चाहिए। चाहे आत्मिक योग्यता सम्बन्धी, धन सम्बन्धी, सुख सम्बन्धी। परन्तु उक्त तीनों लाभ अर्थात् आत्मिक, अर्थ और काम सम्बन्धी में से उसे अधिकतर आत्मिक योग्यता की ओर ध्यान देना चाहिए। जो अपनी विशेषेन्द्रिय, अपना पेट, अपने हाथ, अपने पग, अपनी जिह्वा, अपनी आंखों को पूर्ण वश में रखना चाहिए। उसे घर पर सदा बैठे रहना भी उचित नहीं है। उसे सदा सत्य बोलना चाहिए। एक आर्य की भांति उसे आचरण करना चाहिए। धर्मात्मा पुरुषों को ही उसे विद्या दान देना चाहिए। शास्त्रों में लिखित शुद्धि सम्बंधी नियमों का उसे पालन करना चाहिए। वेदों के अध्ययन में उसे प्रीति रखनी चाहिए। किसी भी प्राणी को कभी भी हानि नहीं पहुंचानी चाहिए, उसे नम्र तो होना चाहिए परन्तु साथ ही दृढ़ भी। सदा अपनी इन्द्रियों को वश में रखते हुए उदारचित्त होना चाहिए।

(गौतम, अध्याय 9 सूत्र 46, 47, 50, 53, 65, 68 से 73)

तीनों वर्णों के द्विजों का समान धर्म वेदाध्ययन, अग्निहोत्र तथा दान देना है। **(गौतम, अध्याय 10, सूत्र 1)**

गृहस्थ को चाहिए कि वेदाध्ययन में, यज्ञों के करने में, सन्तति उत्पन्न करने में तथा अपने अन्याय औचित्य पालन में पूर्ण परिश्रम करता रहे। उसे चाहिए कि अपने यहाँ आए हुए लोगों का उठकर सत्कार करे, उन्हें आसन दे और उनकी स्तुति करता हुआ उनसे मृदुभाषण करे और सब प्राणियों को अपनी शक्ति अनुसार भोजन दिया करे। **(वाशिष्ठ, अध्याय 8, सूत्र 11 से 13)**

भोजन कहता है कि जो मुझे देवों, पितरों, अपने सेवकों, अतिथियों, मित्रों को बिना दिये हुए खाता है, मैं उसको भक्षण कर जाता हूँ और उसके लिए मैं मृत्यु हूँ क्योंकि अपनी घोर मूर्खता के कारण वह विष खाता है, अर्थात ग्रास नहीं खाता परन्तु जो अग्निहोत्र करके, वैश्वदेव करके, अतिथियों का सत्कार करके, अपने साथियों को भोजन कराके जो कुछ बचता है उसे सन्तोष, पवित्रता और श्रद्धा सहित खाता है, उस पुरुष के लिए मैं अमृत हूँ और सचमुच वही मुझसे आनन्द भोगता है।

(बौधायन, प्रश्न 2, अध्याय 3, कंडिका 5, सूत्र 18)

सदाचार का सेवन मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है जिसका आत्मा असदाचार से बिगड़ गया है वह इस लोक और परलोक दोनों में नाश (दुर्दशा) को प्राप्त होता हैं न तपश्चरण, न वेदाध्ययन, न अग्निहोत्र, न पुष्कल दान उस मनुष्य को बचा सकता है जो दुराचारी है और जिसने धर्म मार्ग को परित्याग दिया है। वेद उस मनुष्य को शुद्ध नहीं कर सकते जो आचरण में नीच है, यद्यपि उसने छह अंगो सहित ही वेदों का अध्ययन किया हो। धूर्त पुरुष को जो धूर्तता करता है, पवित्र वेद भी

नहीं बचा सकते। दुराचारी पुरुष की सब मनुष्यों में निन्दा होती है, वह रोगों से दु:ख पाता है और अल्पायु हो जाता है, सदाचार से ही मनुष्य आत्मिक योग्यता प्राप्त करता है, सदाचार से ही धन प्राप्त करता है, सदाचार से ही सुन्दरता प्राप्त करता है और सदाचार से ही कुसंस्कारों के प्रभाव को मिटा देता है। धार्मिक पुरुषों में जो सदाचार के नियम स्थापित हैं, उनके अनुसार जो पुरुष चलता है, जो श्रद्धावान् है और जो द्रोह रहित है वह विशेष गुणान्वित न होने पर भी सौ वर्ष तक जीता है।

(वाशिष्ठ अध्याय से)

अपने कर्त्तव्यों का पालन केवल इस विचार से न करें कि उसे प्रसिद्धि, आय और प्रतिष्ठा प्राप्त होगी क्योंकि फल की आकांक्षा से किया हुआ कर्म कर्त्तव्यपालन नहीं कहलाता। सांसारिक फल तो कर्त्तव्यपालन से स्वयं ही प्राप्त होते हैं यथा आम्र फल की प्राप्ति के लिए जब आम्र वृक्ष बोते हैं तो छाया और सुगन्धि अवश्य ही मिलती है। (जो केवल कर्त्तव्यपालन के विचार से कर्म करता है) उसे यदि सांसारिक फल नहीं भी मिलते तो भी उसका कर्त्तव्यपालन तो पूर्ण हो ही जाता है। धूर्तों, दुष्टों, नास्तिकों और मूर्खों के वचनों को सुनकर क्रुद्ध मत हो और न ही उन वचनों से ठगे जाओ। धर्म और अधर्म यह कहते नहीं फिरते कि हम यहाँ है, हम यहाँ हैं। धर्म वही है जिसके आचरण को तीनो द्विज वर्णों के ज्ञानी पुरुष सराहते हैं और जिस (आचरण) की वह निन्दा करते हैं वह अधर्म है। कर्म ऐसे होने चाहिए जिनका अनुमोदन सब देशों में ऐसे द्विज करें जिन्होंने अपने आचार्यो की यथोचित आज्ञा पालन की है, जो वृद्ध है, जिन्होंने अपनी इन्द्रियों का दमन कर लिया है, जो न तो लोभ और न धूर्तता करते हैं। जो इस प्रकार आचरण करेगा वह दोनों लोकों (यह लोक और परलोक) का भागी बनेगा। **(आपस्तम्ब प्रश्न 1, पटल 7, खण्ड 20 के सूत्र)**

आत्मघात कभी न करे और न ही वह किसी अन्य का प्राण हनन करे नहीं तो उसे अभिशस्त बनना पड़ेगा।

(आपस्तम्ब प्रश्न 1, पटल 10, खण्ड 28, सूत्र 17)

कभी संदिग्ध वार्ता के विषय में ऐसा न बोले मानों वह उसे विस्पष्ट जान रहा है। **(आपस्तम्ब प्रश्न 2, पटल 5, खण्ड 12, सूत्र 21)**

धर्म ही का आचरण करो, अधर्म का नहीं। सत्य ही बोलो, असत्य नहीं। विशाल हृदय वाले बनो, संकुचित हृदय के नहीं। उसकी ओर देखो जो सबसे उच्च (श्रेष्ठ और महान्) है, उसकी ओर नहीं जो सबसे उच्च नहीं है। वृद्ध पुरुष के बाल वृद्धता के लक्षण बतलाते हैं तथा वृद्ध पुरुष के दांत वृद्धता के लक्षण बतलाते हैं परन्तु जीवन की तथा धन की इच्छा वृद्ध पुरुष की भी ह्रास को प्राप्त नहीं होती। आनन्द उसी पुरुष के भाग में है जो कामनाओं को त्याग देता है, जिन कामनाओं को मूर्ख बड़ी कठिनता से छोड़ते हैं, जो (कामनाएं) वय के हरास के साथ हरास को प्राप्त नहीं होतीं और जो जन्म भर के लिए रोग हैं। (वासिष्ठ, अध्याय 30, सूत्र 1, 9, 10)

शूद्र की स्थिति : इस ग्रन्थ के कई स्थानों में प्रकरणानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों के कर्त्तव्यों को संक्षेपत: वर्णन कर दिया है। यहाँ शूद्रों की स्थिति अधिकतर स्पष्टता के साथ जतलाने के लिए हमें इनके विषय में कुछ ओर वर्णन करना है क्योंकि आगे हमें खानपान और छुआछूत के विषय में भी कुछ लिखना पड़ेगा।

शूद्र उन्हीं को कहते हैं जो मन्द बुद्धि होने के कारण विद्याध्ययन नहीं कर सकते हों चाहे वे ब्राह्मण के पुत्र हों, क्षत्रिय के, वैश्य के या फिर शूद्र के। शूद्र का भी पुत्र यदि बुद्धिमान् होने के कारण विद्याध्ययन करके ज्ञान बन जाता था तो वह भी पूर्ण पूजा का पात्र माना जाता था। परमात्मा यदि शूद्र के पुत्र में बुद्धि दे और वह बुद्धि औरों के ज्ञान प्रदान से बढ़ाई जाए तो कोई भी अवरोध ऐसा नहीं दिखता जिससे कि उक्त शूद्र का पुत्र ज्ञानी न बन सके। प्राचीन काल में शूद्रों के बुद्धिमान पुत्रों को आचार्य लोग बराबर पढ़ाते रहे हैं और परमात्मा की कृपा से वे बड़े-बड़े ज्ञानी हो चुके हैं। ऐतरेय ब्राह्मण की द्वितीय पंजिका के तृतीय अध्याय के प्रथम खण्ड में लिखा है :-

''ऋषयो वै सरस्वत्यां सत्रमासत ते कवषमैलूषं सोमादनयन् दास्या: पुत्र: कितवोऽब्राह्मण: कथं नो मध्ये दीक्षिष्टेति.....ते वा ऋषयोऽब्रुवन् विदुर्वा इमं देवा:।''

अर्थात किसी समय ऋषि-मुनि सरस्वती नदी के किनारे यज्ञ कर रहे थे, उस समय **इलूष** नाम का पुरुष का पुत्र **कवष** उनके बीच आ बैठा। ऋषि बोले यह दासी का पुत्र जो अब्राह्मण है, हम लोगों के बीच बैठकर किस प्रकार दीक्षा कर सकता है? पुन: वे सब ऋषि बोले इसको तो देवता लोग भी जानते हैं, इत्यादि। इस प्रमाण से सिद्ध होता है कि उक्त **कवष ऐलूष बड़ा ज्ञानी** हो गया था कि उसकी प्रसिद्धि देवताओं (विद्वानों) में फैल गई थी।

ऋग्वेद मंडल 10 अनुवाक 3, सूक्त 30 से 34 का ऋषि अर्थात् समाधि द्वारा इन सूक्तों के मन्त्रों का यथार्थ परमात्मा के द्वारा जानकर इनका प्रचारक **कवष ऐलूष** हुआ है जिसका नाम अति प्राचीनकाल के उक्त सूक्तों के ऊपर लिखा चला आता है। दासी का पुत्र बुद्धिमान्, ज्ञानी तथा परमात्मा का उपासक बनने से यदि मंत्रदृष्टा ऋषि बन सकता है तो उसके लिए अन्य कौन-सी महत्ता शेष रह गई?

इसी प्रकार ऋग्वेद मंडल 1, अनुवाक 17 के सूक्त 116 से 126 तक का ऋषि अर्थात् इनके अर्थो का प्रथम 2 प्रचारक (शूद्रा ओशिक का पुत्र) कक्षिवान् था। '**औशिकपुत्र: कक्षिवानृषि:**' यह नाम उक्त सूक्तों के ऊपर आर्य लोग अति प्राचीन काल से लिखते हैं।

छान्दोग्योपनिषद् प्रपाठक 4 में स्पष्ट लिखा है कि सत्यकाम जावाल की माता ने उसे किससे गर्भधारण करके उत्पन्न किया। यह जावाल की माता को ज्ञान न था, अत: जावाल का कुल कुछ भी ज्ञात न था परन्तु उसे महर्षि गौतम ने पढ़ाया एवं महर्षि रैक्व ने शूद्र के बालक जानश्रुति को विद्यादान दिया। ...**क्रमश:**

धैर्य और संतोष जीवन नौका के वे पतवार हैं जो नौका को मंजिल तक ले जाते हैं।

आर्यसमाज सर्वोत्तम सामाजिक संस्था है

मनमोहन आर्य

आर्यसमाज विद्या प्रधान एक धार्मिक एवं सामाजिक संगठन है। यह ऐसी संस्था है जो किसी भी विषय की उपेक्षा नहीं करती और सत्य ज्ञान हो ही महत्त्व देती है। इसकी यह भी विशेषता है कि यह सत्य और असत्य के निर्णयार्थ ज्ञान व विज्ञान सहित चिन्तन, मनन और विचार एवं ध्यान को महत्त्व देती है। इस कारण यह संसार के सभी धार्मिक संस्थाओं से श्रेष्ठ व महान है। हमें अध्ययन कर इस बात को स्वीकार करना पड़ता है कि आर्यसमाज से इतर संसार में जितनी भी धार्मिक व सामाजिक संस्थाएं हैं, वह आर्यसमाज के समान विद्या और ज्ञान को महत्त्व देकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने में तत्पर नहीं है। यदि ऐसा होता तो वह अवश्य आर्यसमाज से मिलकर सत्यासत्य के निर्णय में सहयोग करतीं और जो निर्णय होता उसे अवश्य स्वीकार करती। आर्यसमाज वेद को ईश्वर प्रदत्त व ईश्वरीय ज्ञान मानता है। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है तथा अन्य किसी मत का कोई पुस्तक ईश्वरीय ज्ञान के मापदण्डों की पूर्ति नहीं करता, इसे आर्यसमाज तर्क की कसौटी पर कसकर सिद्ध करता है। हम केवल यहाँ ईश्वरीय ज्ञान की एक कसौटी की चर्चा करते हैं।

यह कसौटी है कि ईश्वरीय ज्ञान में कोई भी बात ज्ञान-विज्ञान व सृष्टिक्रम में विरुद्ध व विपरीत नहीं हो सकती। इस कसौटी पर जब संसार के सभी मत-मतान्तरों के ग्रन्थों की परीक्षा करते हैं तो वेद व ऋषि प्रणीत ग्रन्थों के अतिरिक्त कोई भी ग्रन्थ इस कसौटी पर खरा व सत्य सिद्ध नहीं होता। यही कारण है कि संसार में अनेकानेक मत-मतान्तर हैं जो अपनी-अपनी ढफली व अपना-अपना राग अलाप रहे हैं और किसी में साहस नहीं है कि वह सच्चे व खुले मन व मस्तिष्क से सत्य को जानकर उसे स्वीकार अथवा अपने मत की मान्यताओं की परीक्षा कर उसमें सत्य व ज्ञान के विपरीत बातों को हटा दें। यह साहस महाभारत काल के बाद सबसे पहले प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती के अपूर्व प्रतिभाशाली शिष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था और जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अपने प्राणों का बलिदान करना पड़ा।

यदि संसार व सृष्टि पर दृष्टि डाले तो इसका समस्त कार्य ज्ञान व विज्ञान के आधार पर चल रहा है। वैज्ञानिकों ने आज तक जितनी भी खोजें की है, उनसे ज्ञात होता है कि एक परमाणु व उसके अन्दर सूक्ष्म कण भी ईश्वर द्वारा बनाये गये विज्ञान व सृष्टि नियमों का पालन करते हैं। पृथ्वी गोल है और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है जिससे ऋतु परिवर्तन होता है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। आज यह ज्ञान सामान्य है, परन्तु मत-मतान्तर के ग्रन्थ, जिन्हें उनके अनुयायी ईश्वरीय व पारलौकिक ज्ञान मानते हैं, उनके ग्रन्थों में यह बातें या तो नदारद हैं या इसके विपरीत मिथ्या ज्ञान दिया गया है। इन मतों के ग्रन्थों के विपरीत वेदों की उत्पत्ति सृष्टि के आदि काल में अब से लगभग **1.96 अरब वर्ष** पूर्व हुई थी। इतना प्राचीन कोई ग्रन्थ संसार में नहीं है। प्राचीन से प्राचीन ग्रन्थ रामायण व महाभारत, दर्शन या उपनिषद् सभी में वेदों का उल्लेख मिलता है। मत-मतान्तरों के ग्रन्थ 2000 से 2500 अथवा 3000 वर्षों से अधिक पुराने नहीं है। इनमें तो वेदों के अनुरूप सत्य ज्ञान होना चाहिए था परन्तु वेदों तक इन मत-मतान्तरों के आचार्यों की पहुँच न होने के कारण वह मध्यकालीन मान्यताओं का ही अनुकरण करते हुए दिखाई देते हैं।

ऋषि दयानन्द ऐसे पहले मनुष्य हुए जिन्होंने संसार के सभी मत-मतान्तरों के ग्रन्थों का अध्ययन किया था। उन्होंने यह पाया और उनका विस्तृत उल्लेख भी सत्यार्थप्रकाश में करके यह सिद्ध किया कि सभी मत-मतान्तर व उनके ग्रन्थ अविद्या, अज्ञान, असत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों से युक्त, ग्रस्त व भ्रमित हैं। यदि कोई पाठक सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर ले तो वह इसी निष्कर्ष पर पहुंचता है कि वेद व वेदानुकूल ग्रन्थों के अतिरिक्त संसार के सभी ग्रन्थ मिथ्या व असत्य मान्यताओं से ग्रस्त हैं तथा सभी में अविद्या व अज्ञान प्रचुर मात्रा में विद्यमान है जिससे उनके अनुयायियों को मिथ्याचार के कारण नाना प्रकार की हानियाँ हो रही है। उनका वर्तमान जीवन ही नहीं अपितु मृत्यु के बाद परजन्म भी इस जन्म के अविद्याजन्य कर्मों के कारण उन्नत न होकर अवनत स्थिति को ही प्राप्त होता है जिसमें उनके मनुष्य योनि में जन्म न लेकर पशु-पक्षियों आदि निम्न योनियों में जन्म लेने की भी पूरी सम्भावना है। यह भी बता दें कि बहुत से मत पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं करते। यह उनकी सबसे बड़ी अविद्या है। ज्ञान व विज्ञान के आधार पर जीवात्मा एक अनादि, अमर व अविनाशी सत्ता है। जब उसका यह जन्म हुआ है, तो स्वाभाविक है कि अनादि होने के कारण इससे पूर्व भी उसका जन्म होता रहा है और आगे भी होता रहेगा। इस जन्म व मृत्यु का नियमन, करने वाला सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान परमात्मा है।

आर्यसमाज की सभी मान्यताएं एवं सिद्धान्त विद्या व ज्ञान पर आधारित हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदों का गंभीर व तलस्पर्शी अध्ययन कर व योगाभ्यास द्वारा ईश्वर साक्षात्कार से प्राप्त ज्ञान के अनुसार आर्यसमाज की मान्यताओं व सिद्धान्तों को बनाया है। आर्यसमाज की संसार के सभी मत-मतान्तरों को चुनौती है कि वह उसकी मान्यताओं

निष्पक्ष न्याय करने वाले मनुष्य से परमेश्वर प्यार करता है।

पर विचार एवं परीक्षा कर सत्य होने पर ही उन्हें स्वीकार करें। हम यहाँ आर्यसमाज की ईश्वर व जीवात्मा विषयक मान्यता प्रस्तुत करते हैं। ईश्वर विषयक आर्यसमाज की मान्यता है कि ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वोन्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता हैं उसी की उपासना करनी योग्य है। ईश्वर सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है। ऋषि दयानन्द ने आत्मा और परमात्मा का यह स्वरुप अपने ग्रन्थों में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार ईश्वर के अनन्त गुण, कर्म, व स्वभाव हैं और उसी के अनुसार उसके निज नाम 'ओ३म्' के अतिरिक्त गुणवाचक व सम्बन्धवाचक आदि अनेक व असंख्य नाम हैं। ईश्वर की सत्ता केवल और केवल एक है, वह दो, तीन, चार व अधिक नहीं है।

मनुष्य की आत्मा का सत्य स्वरूप भी आर्यसमाज प्रस्तुत करता है जो तर्क, युक्ति सहित वेदों के प्रमाणों से सिद्ध हैं इसके अनुसार मनुष्य का आत्मा इच्छा, द्वेष, सुख, दु:ख, ज्ञानादि गुणयुक्त, अल्पज्ञ और नित्य है। आत्मा अनादि, नित्य, अजर, अमर, एकदेशी, ससीम, कर्म करने में स्वतंत्र और फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार परतन्त्र भी है। जीवात्माओं को उनके पूर्व जन्मों के कर्मानुसार सुख व दु:ख प्रदान करने व नये कर्मो को करके जीवन की उन्नति के लिए ही ईश्वर जीवात्माओं को जन्म देता है। हर मृत्यु के बाद जीवात्मा का कर्मानुसार तब तक जन्म होता रहता है जब तक कि उसे मुक्ति नहीं मिल जाती। यह आत्मा के वैदिक स्वरूप व उसके जन्म-मरण-मुक्ति के चक्र की स्थिति है।

जीवात्मा एकदेशी, ससीम ओर अल्पज्ञ है। ईश्वर सर्वव्यापक, असीम और सर्वज्ञ है। मनुष्य के पास जो शरीर व धन सम्पदा है, उसका स्वामी एकमात्र ईश्वर ही है। इस कारण जीवात्मा ईश्वर का ऋणी है। इस ऋण से उऋण होने और जीवन में सद्गुणों को धारण करने सहित विवेक और मोक्ष प्राप्ति के लिए उसे ईश्वर की उपासना एवं परोपकार आदि सद्कर्मो का करना आवश्यक है। इसका तर्क व युक्तिसंगत ज्ञान भी आर्यसमाज प्रस्तुत करता है। आर्यसमाज स्त्री हो या शूद्र, श्रमिक, गरीब व अमीर सबकी समान व अनिवार्य शिक्षा का समर्थक व पोषक है। इसका उदाहरण आर्यसमाज के गुरुकुलों में देखा जा सकता है।

आर्यसमाज जन्मना जातिवाद का विरोध करता है जो कि कृत्रिम है व मुनष्यों में ऊंच-नीच का भेदभाव पैदा करता है। इससे समाज में शोषण व अन्याय को बढ़ावा मिलता है। इसके विपरीत आर्यसमाज गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित ऐसी वर्णव्यवस्था का पोषक है जिसमें किसी के प्रति किंचित भी अन्याय, शोषण व भेदभाव न हो। छुआछूत का प्रश्न भी वैदिक वर्णव्यवस्था में नहीं है। वैदिक वर्ण व्यवस्था की श्रेष्ठता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि वैदिक काल में अज्ञानी व्यक्तियों को शूद्र कहा जाता था। यह शूद्र उच्च कोटि के वेदज्ञानी ब्राह्मणों के यहाँ भोजन बनाने व अन्य सेवा के कार्य करते थे और उनके हितों का भी इनके स्वामी पूरा ध्यान रखते थे। यह भी बता दें कि शूद्रों की सन्तानों को भी विद्याध्ययन की पूर्ण सुविधायें प्राप्त थी। अध्ययन में असफल और सेवा कार्य को जीवन का उद्देश्य बनाने वाले ही शूद्र कोटि में आते थे। आर्यसमाज जीवित माता-पिता व परिवार के सभी वृद्धजनों की सेवा-सुश्रुषा सहित उनके आदर-सत्कार का समर्थन करता है। पशु-पक्षियों आदि के प्रति भी उसका करूणा व दया का भाव है और वह पूर्णत: किसी भी प्राणी को अकारण दण्ड देने सहित उनकी हत्या व मांसाहार का सख्त विरोधी है। वेद भी पशु हत्या के विरोधी है तथा उनकी सेवा का विधान करते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं जिनसे वैदिक समाज व्यवस्था सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होती है।

जहाँ नारियाँ पूजी जाती हैं, वहाँ देवताओं का वास होता है।

आर्यसमाज विद्या प्रधान धार्मिक व सामाजिक संस्था है। वेद सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ है। वेदाध्ययन से मनुष्य की अविद्या का नाश होकर उसमें विद्या का प्रकाश होता है जिससे उसका जीवन श्रेष्ठ व उन्नत होता हैं इसी कारण आर्यसमाज सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा तत्पर रहता है व अपने अनुयायियों से भी अपेक्षा करता है कि वह अपने निजी जीवन में भी ऐसा ही करें। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना भी आर्यसमाज का नियम व सिद्धान्त है। आर्यसमाज का एक स्वर्णिम नियम यह भी है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। एक नियम यह है कि संसार का उपकार करना ही आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् सभी मनुष्यों की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। ऐसे ही अन्य नियम भी हैं।

अविद्या दूर करने के लिए ऋषि दयानन्द ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। कुछ मुख्य ग्रन्थों के नाम हैं - सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, पंचमहायज्ञविधि, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु, आत्मकथा, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि। हम संसार के लोगों का आर्यसमाज में आकर इसके सिद्धान्तों की परीक्षा कर इसे स्वीकार करने का आह्वान करते हैं। ऐसा करने से जीवन की उन्नति सहित धर्म, अर्थ, कार्म व मोक्ष की प्राप्ति इस जन्म व भावी जन्मों में ईश्वर की कृपा से हो सकती है। आर्यसमाज का अर्थ श्रेष्ठ लोगों का समूह या संस्था है। आर्यसमाज वस्तुत: यथा नाम तथा गुण वाली संस्था है जिसका कारण इसका निर्माण एक सच्चे ईश्वरोपासक व ऋषि द्वारा स्थापित करना है। इसका ज्ञान आपको ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़कर हो जाएगा।

ओ३म् शम्।

भारत में गौ-हत्या पर लगे पूर्ण प्रतिबन्ध

मोदी सरकार ने खुलेआम गाय आदि पशुओं की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया। सरकार के इस कदम से तथाकथित सैक्युलर / वामपंथी / नास्तिक / मुस्लिम और ईसाई संगठन विरोध करने बैठ गये। केरल में तो कुछ लोगों ने सरेआम गोहत्या कर मुसलमानों को खुश करने का प्रयास किया। उनके इस कदम की जितनी निंदा हो सके, होनी चाहिए। भारतीय इतिहास में गौ-हत्या को लेकर कई आंदोलन हुए हैं और कई आज भी जारी हैं। लेकिन अभी तक गौ-हत्या पर प्रतिबन्ध नहीं लग सका है। इसका सबसे बड़ा कारण राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी होना है। आप कल्पना कीजिए हर रोज जब आप सोकर उठते हैं तब तक हजारों गौओं के गलों पर छूरी चल चुकी होती है। गौ-हत्या से सबसे बड़ा फायदा तस्करों एवं गाय के चमड़े का कारोबार करने वालों को होता है। इनके दबाव के कारण ही सरकार गौ-हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने से पीछे हट रही है वरना जिस देश में गाय को माता के रूप में पूजा जाता हो, वहाँ सरकार गौ-हत्या रोकने में नाकाम है।

आज हमारे देश में नरेन्द्र मोदी जी की सरकार है। सैक्युलरवाद और अल्पसंख्यकवाद के नाम पर पिछले अनेक दशकों से बहुसंख्यक हिन्दुओं के अधिकारों का दमन होता आया है। उसी के प्रतिरोध में हिन्दू प्रजा ने संगठित होकर, जात-पात से ऊपर उठकर एक सशक्त सरकार को चुना है इसलिए इस सरकार का कर्त्तव्य बनता है कि वह बदले में हिन्दुओं की शताब्दियों से चली आ रही गौ-रक्षा की मांग को पूरा करे और गौ-हत्या पर पूर्णत: प्रतिबन्ध लगाए। अक्सर देखने में आता है कि बिकाऊ मीडिया और पक्षपाती पत्रकारों के प्रभाव से हम यह आंकलन निकाल लेते हैं कि सारे देशवासियों की भी यही राय होगी जो इन पत्रकारों, बुद्धिजीवियों की होती है। मगर देश की जनता ने चुनावों में मोदी जी को जीत दिलाकर यह सिद्ध कर दिया कि नहीं, यह केवल आसमानी किले हैं। इसलिए सकार को चंद उछल-कूद करने वालों की संभावित प्रतिक्रिया से प्रभावित होकर गौ-हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने से पीछे नहीं हटना चाहिए। ध्यान दीजिए, मुस्लिम शासनकाल में गो-हत्या पर रोक थी। भारत में मुस्लिम शासन के दौरान कहीं भी गौ-हत्या को लेकर हिन्दू और मुसलमानों में टकराव देखने को नहीं मिलता। **बाबर से लेकर अकबर ने गौ-हत्या पर रोक लगायी थी।** औरंगजेब ने इस नियम को तोड़ा तो उसका साम्राज्य तबाह हो गया। आखिर मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर ने भी 28 जुलाई 1857 को बकरीद के मौके पर गाय की कुर्बानी न करने का फरमान जारी किया था। साथ ही चेतावनी दी थी कि जो भी गौ-वध करने या कराने का दोषी पाया जाएगा, उसे मौत की सजा दी जाएगी।

भारत में गौ-हत्या को बढ़ावा देने में अंग्रेजों ने अहम् भूमिका निभाई। जब 1700 ई. में अंग्रेज भारत आए थे, उस समय यहाँ गाय और सूअर का वध नहीं किया जाता था। हिन्दू गाय को पूजनीय मानते थे और मुसलमान सूअर का नाम तक लेना पसंद नहीं करते थे। अंग्रेजों ने मुसलमानों को भड़काया कि कुरआन में कहीं भी नहीं लिखा है कि गाय की कुर्बानी हराम है इसलिए उन्हें गाय की कुर्बानी करनी चाहिए। उन्होंने मुसलमानो को लालच भी दिया और कुछ लोग उनके झांसे में आ गये। इसी तरह उन्होंने दलित हिन्दुओं को सूअर के मांस की बिक्री पर मोटी रकम कमाने का झांसा दिया। 18वीं सदी के आखिर तक बड़े पैमाने पर गौ-हत्या होने लगी। अंग्रेजों की बंगाल, मद्रास और बंबई प्रेसीडेंसी सेना के रसद विभागों ने देशभर में कसाईखाने बनवाए। जैसे-जैसे यहाँ अंग्रेजी सेना और अधिकारियों की तादाद बढ़ने लगी, वैसे-वैसे गौ-हत्या में भी बढ़ोतरी होती गई।

गौ-हत्या और सूअर-हत्या की आड़ में अंग्रेजों को हिन्दू और मुसलमानों में फूट डालने का भी मौका मिल गया। इस दौरान हिन्दू संगठनों ने गौ-हत्या के खिलाफ मुहिम छेड़ दी। नामधारी सिखों का कूका आन्दोलन की नींव गौरक्षा के विचार से जुड़ी थी। हरियाणा प्रान्त में हरफूल जाट जुलानी ने अनेक कसाईखानों को बर्बाद करके कसाइयों को यमलोक पहुंचा दिया। हरफूल जाट ने अपने प्राणों की बलि दे दी मगर गौरक्षा से पीछे नहीं हटे। 1857 की क्रांति, मंगल पांडेय का बलिदान इसी गौरक्षा अभियान के महान बलिदानों से सम्बंधित है। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने गौरक्षा के लिए आधुनिक भारत में सबसे व्यापक प्रयास आरम्भ किये। उन्होंने गौरक्षा एवं खेती करने वाले किसानों के लिए 'गौ करुणानिधि' पुस्तक की रचना कर सप्रमाण यह सिद्ध किया कि गौरखा क्यों आवश्यक है। स्वामी जी यहाँ तक नहीं रुके। उन्होंने भारत की पहली गौशाला रेवाड़ी में राव युधिष्ठिर के सहयोग से स्थापित की जिससे गौरक्षा हो सके। इसके अतिरिक्त उन्होंने पांच करोड़ भारतीयों के हस्ताक्षर करवाकर महारानी विक्टोरिया के नाम गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रस्ताव भेजने का अभियान भी चलाया। यह अभियान उनकी असमय मृत्यु कारण पूरा न हुआ। मगर इससे भारतवर्ष में हजारों गौशालाओं की स्थापना हुई एवं गौरक्षा अभियान को लोगों ने अपने प्रबंध से चलाया। भारत में गौरक्षा अभियान के समाचार लन्दन में पहुंचे। आखिरकार महारानी विक्टोरिया ने वायसराय लैंस डाउन को पत्र लिखा। महारानी ने कहा, हालांकि मुसलमानों द्वारा की जा रही गौहत्या आन्दोलन का कारण बनी है, लेकिन हकीकत में यह हमारे खिलाफ है क्योंकि मुसलमानों से कहीं ज्यादा गौ-वध हम कराते हैं। इसके जरिए ही हमारे सैनिकों को गौ-मांस मुहैया हो पाता है। इसके

बाद 1892 में देश के विभिन्न हिस्सों से सरकार को हस्ताक्षरयुक्त पत्र भेजकर गौ-वध पर रोक लगाने की मांग की जाने लगी। इन पत्रों पर हिन्दुओं के साथ मुसलमानों के भी हस्ताक्षर होते थे। 1947 के पश्चात भी गौरक्षा के लिए अनेक अभियान चले। 1966 में हिन्दू संगठनों ने देशव्यापी अभियान चलाया। हजारों गौभक्तों ने गोलियाँ खाई मगर पीछे नहीं हटे। राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमी के चलते यह अभियान सफल नहीं हुआ।

इस समय भी देशव्यापी अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें केन्द्र सरकार से गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने और भारतीय गौवंश की रक्षा के लिए कठोर कानून बनाये जाने की मांग की जा रही है। गाय की रक्षा के लिए अपनी जान देने में भारतीय मुसलमान किसी से पीछे नहीं है। उत्तर प्रदेश के **सहारनपुर जिले के गांव नंगला झंडा** निवासी **डॉ. राशिद अली** ने गौ-तस्करों के खिलाफ मुहिम छेड़ रखी है जिसके चलते 20 अक्तूबर 2003 को उन पर जानलेवा हमला किया गया और उनकी मौत हो गई। उन्होंने 1998 में गौरक्षा का संकल्प लिया था और तभी से **डॉक्टरी का पेशा छोड़कर** वह अपनी मुहिम में जुट गये थे। गौवध को रोकने के लिए विभिन्न मुस्लिम संगठन भी सामने आए हैं। **दारूल उलूम देवबंद** ने एक फतवा जारी करके मुलसमानों को गौ वध न करने की अपील की है। फतवा विभाग के अध्यक्ष मुफ्ती हबीबुर्रहमान का कहना है कि भारत में गाय को माता के रूप में पूजा जाता है। इसलिए मुसलमानों को उनकी धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हुए गौ वध से खुद को दूर रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि शरीयत किसी देश के कानून को तोड़ने का समर्थन नहीं करती। बता दें कि इस फतवे की पाकिस्तान में कड़ी आलोचना की गई थी। इसके बाद भारत में भी इस फतवे को लेकर खामोशी अख्तियार कर ली गई।

गाय भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक अहम भाग है। यहाँ गाय की पूजा की जाती है। यह भारतीय संस्कृति से जुड़ी है। महात्मा गांधी कहते थे कि अगर निस्वार्थ भाव से सेवा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण कहीं देखने को मिलता है तो वह गौ माता है। गाय का जिक्र करते हुए वे लिखते हैं - ''गौ माता जन्म देने वाली माता से श्रेष्ठ है। हमारी माता हमें दो वर्ष दुग्धपान कराती हैं और यह आशा करती है कि हम बड़े होकर उसकी सेवा करेंगे। गाय हमसे चारे और दाने के अलावा किसी और चीज की आशा नहीं करती। हमारी माँ प्रायः रूग्ण हो जाती है और हमसे सेवा की अपेक्षा करती है। गौ माता शायद ही कभी बीमार पड़ती है। वह हमारी सेवा आजीवन ही नहीं करती अपितु मृत्यु के बाद भी करती है। अपनी माँ की मृत्यु होने पर हमें उसका दाह-संस्कार करने पर भी धनराशि व्यय करनी पड़ती है। गौ माता मर जाने पर भी उतनी ही उपयोगी सिद्ध होती है, जितनी अपने जीवनकाल में थी। हम उसके शरीर के हर अंग मांस, अस्थियां, आंत, सींग और चर्म का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह बात जन्म देने वाली मां की निन्दा के विचार से नहीं कह रहा हूँ बल्कि यह दिखाने के लिए कह रहा हूँ कि गाय की पूजा क्यों करता हूँ।''

महात्मा गांधी का नाम लेकर पूर्व में अनेक सरकारें बनी मगर गौहत्या पर प्रतिबन्ध नहीं लगा। आज इस देश की मोदी सरकार से हम प्रार्थना करते हैं कि समस्त देश की भावनाओं का सम्मान करते हुए गौ-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाए एवं गौ हत्या करने वाले को कठोर से कठोर दंड मिले।

- डॉ. विवेक आर्य

ईश्वर को कभी मत भूलो

सन् 1970 की बात है। तिरुवनंतपुरम् में समुद्र के पास एक बुजुर्ग भगवद्गीता पढ़ रहे थे। तभी एक नास्तिक और होनहार नौजवान उनके पास आकर बैठा, उसने उन पर कटाक्ष किया कि लोग भी कितने मूर्ख हैं, विज्ञान के युग में गीता जैसी ओल्ड फैशन्ड बुक पढ़ रहे है। उसने उन सज्जन से कहा कि आप यदि यही समय विज्ञान को दे देते तो अब तक देश ना जाने कहाँ से कहाँ पहुँच जाता।

उन सज्जन ने उस नौजवान से परिचय पूछा तो उसने बताया कि वो कोलकाता से है और विज्ञान की पढ़ाई की है, अब यहाँ परमाणु अनुसंधान में अपना कैरियर बनाने आया हूँ।

आगे उसने कहा कि आप भी थोड़ा ध्यान वैज्ञानिक कार्यो में लगायें। भगवद्गीता पढ़ते रहने से आप कुछ हासिल नहीं कर सकेंगें। सज्जन मुस्कुराते हुए जाने के लिए उठे। उनका उठना था कि 4 सुरक्षाकर्मी वहाँ उनके आसपास आ गये। आगे ड्राईवर ने कार लगा दी जिस पर लालबत्ती लगी थी। यह देख लड़का घबराया और उसने उनसे पूछा कि -आप कौन हैं?

उस सज्जन ने अपना नाम बताया - विक्रम साराभाई। जिस भाभा परमाणु अनुसंधान में लड़का अपना कैरियर बनाने आया था, उसके अध्यक्ष वही थे। उस समय विक्रम साराभाई के नाम पर 13 अनुसंधान केन्द्र थे, साथ ही साराभाई को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने परमाणु योजना का अध्यक्ष भी नियुक्त किया था।

अब शर्मसार होने की बारी लड़के की थी। वह साराभाई के चरणों में रोते हुए गिर पड़ा। तब साराभाई ने बहुत अच्छी बात कही। उन्होंने कहा - ''हर निर्माण के पीछे निर्माणकर्ता अवश्य है इसलिए फर्क नहीं पड़ता कि ये महाभारत है या आज का भारत। ईश्वर को कभी मत भूलो।''

अतः हमें उस परम पिमा परमेश्वर को हमेशा याद रखना चाहिए।

राजा जैसा आचरण करता है, प्रजा उसी का अनुसरण करती है।

बुजुर्गों का सम्मान कर भविष्य सुधारें

माता-पिता जो अपनी युवावस्था में अपने बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए स्वयं को भूलकर, जी तोड़ मेहनत कर उन्हें सभी सुख-सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं। उन्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाते हैं और उच्च शिक्षा के पश्चात् वे सन्तानें विदेशों अथवा देश के महानगरों में या फिर बड़े-बड़े शहरों में नौकरी, रोजगार मिल जाने पर उन्हें माता-पिता को घर पर अकेला छोड़ देते हैं हताश और एकाकी जीवन जीने के लिए। जिनकी पथराई आँखें हमेशा उनका इंतजार करती रहती हैं।

इसी प्रकार बड़े अरमानों के साथ बेटे का विवाह कर माता-पिता जिस बहू को डोली में बिठाकर लाते हैं। विवाह के कुछ समय बाद वे बेटा-बहू अपनी निजी जिन्दगी में सब कुछ भुलाकर इतना रम जाते हैं कि घर के बुजुर्ग माता-पिता उन्हें भार लगने लगते हैं और फलस्वरूप या तो वे माता-पिता को छोड़कर अलग चले जाते हैं या फिर उन्हें घर से निकल जाने को मजबूर कर देते हैं।

अति आधुनिक सोच के कारण अतिशिक्षित युवा जिनके घर में वृद्ध माता-पिता हैं, हमेशा अपने पुत्र-पुत्रियों को **चलो होमवर्क करो, इनसे क्या सीखोगे, ये पुराने लोग हैं, अपना काम करो इत्यादि** बातों द्वारा अपने-अपने माता-पिता को हतोत्साहित तथा उनकी उपेक्षा करते नजर आते हैं।

एक ओर सर्वाधिक घातक प्रवृत्ति कि जब तक माता-पिता या बुजुर्ग कमाते हैं, घर का कार्य करने में समर्थ है तब तक उनकी बड़ी आवभगत, मान-सम्मान एवं देखभाल और ज्यों ही वे वृद्ध सेवानिवृत्त अर्थात् कार्य करने में असमर्थ हुए नहीं कि वे माता-पिता सन्तानों को पर्वत से अधिक भारी लगने लगते हैं। फलस्वरूप प्रारम्भ होता है तानों, उलाहनों के माध्यम से दिन-प्रतिदिन का अपमान और उनकी सुविधाओं में कटौती का खतरनाक सिलसिला। जिससे उनका जीवन नरकीय बन जाता है।

ये चन्द वे उदाहरण मात्र हैं जो आज के दौर में हमें अपने चारों ओर वृद्धों के साथ देखने को मिलते हैं। आज के इस भौतिकवादी, आधुनिक, बाजारवाद के आधार पर विकसित भोगवादी समाज में मानवीय संवेदनाओं और पारिवारिक परिस्थितियों पर सर्वाधिक कुठाराघात किया है जिसकी सर्वाधिक मार घर-परिवार के बुजुर्गों को सहनी पड़ रही है।

आज अधिकांश घरों में बूढ़े माता-पिता, दादा-दादी को अकेले में अवसादित जीवन व्यतीत करते देखा जा सकता है। आधुनिक सुख-सुविधाओं की चाह, स्वतंत्र जीवन जीने की प्रवृत्ति ने समाज की अमूल्य धरोहर बुजुर्गों को सबकुछ होते हुए भी अनुपयोगी वस्तु (कबाड़) के समान घर में चुपचाप रहने को मजबूर कर दिया है या फिर आवाज उठाने पर घर से बाहर वृद्धाश्रमों का रास्ता दिखा दिया है। घर या वृद्धाश्रमों में एकाकी रह रहे ये बुजुर्ग शिकार हैं अपनो की उस आधुनिक भौतिकवादी सोच का जो उन्हें समाज में एक अनुपयोगी तत्त्व मानती है। अपने विकास में बाधक समझती है। वे भूल जाते हैं कि वृद्धावस्था मनुष्य जीवन की एक अवश्यम्भावी प्रवृत्ति है। प्रत्येक को इस स्थिति से गुजरना पड़ेगा। यदि आज का बुजुर्ग दुर्व्यवस्था का शिकार है तो सत्य मानिए वर्तमान के युवा का भविष्य भी अंधकारमय है।

वृद्धाश्रमों की संख्या में बढ़ोतरी मानवीय संवेदनहीनता का परिणाम है। मनोवैज्ञानिक रिसर्चों ने भी स्पष्ट किया है कि 80 प्रतिशत से भी अधिक वृद्ध वृद्धाश्रम के जीवन से संतुष्ट नहीं होते हैं। पोते-पोती, बेटा-बहू, घर-परिवार के प्रति हार्दिक लगाव उन्हें निरन्तर बेचैनी देता है।

उपेक्षा नहीं सम्मान करें

ये वृद्ध परिवार से धन दौलत या भौतिक सुविधाओं की चाह नहीं रखते हैं, केवल सम्मान चाहते हैं। इनकी चाह इतनी सी है कि उन्हें अपनों का प्यार मिले। परिवार उनके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करें। तानों, उलाहनों से अपमानित वचनों से मुक्ति मिले। उन्हें उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर नहीं किया जाए।

समझे परिवार की अवधारणा

बुजुर्गों के उपेक्षित जीवन के पीछे परिवार की अवधारणा को ठीक ढंग से नहीं समझ पाना भी एक बड़ा कारण है। आधुनिक पारिवारिक अवधारणा में परिवार नाम केवल पति-पत्नी और उनके बच्चों का है। इसी कारण बेटा, बहू द्वारा जीवन में वृद्ध माता-पिता, सास-ससुर उपेक्षित कर दिये जाते हैं। जबकि परिवार की प्राचीन अवधारणा में पति-पत्नी एवं उनके बच्चों के अतिरिक्त माता-पिता, बुजुर्ग, दादा-दादी का भी समावेश है।

आज आवश्यकता है उस पुरातन धारणा को समझने की। इसे अपनाकर जब परिवार के अभिन्न अंग के रूप में बुजुर्गों को स्वीकार करने लगेंगें तो स्वतः ही इनके प्रति आपके मन में प्रेम, स्नेह एवं सम्मान की भावना जन्म लेने लगेगी और वे उपेक्षित बुजुर्ग अपने बन जाएंगे।

संस्कारों के संवाहक है बुजुर्ग

घर-परिवार, समाज, राज्य के समृद्धिपूर्ण तथा मानव जीवन निर्माण में संस्कार का बड़ा महत्त्व होता है। बुजुर्ग ही वे होते हैं जो संस्कार को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। यदि वे उपेक्षित हैं तो जानिये समाज का नैतिक विकास उपेक्षित है। स्वतंत्रता अधिकार तो

दुर्बल और मर्यादाहीन मनुष्य की संगति नहीं करनी चाहिए।

वृद्धों की सेवा कर्त्तव्य है। प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रता चाहता है, अधिकार चाहता है और युवा दम्पत्ति अपने पारिवारिक जीवन में इसी स्वतंत्रता के नाम पर बुजुर्गों की अवहेलना करते हैं, किन्तु व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति का नाम स्वतंत्रता नहीं है। उन्मुक्त जीवन विनाश की ओर ले जाता है। घर-परिवार से वृद्धों की उपेक्षा ही परिणाम है कि आज नवविवाहितों एवं अति शिक्षितों के बीच विवाह-विच्छेद के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं, अतः स्वतंत्रता के साथ घर में बुजुर्गों के महत्त्व को समझें, उनकी सेवा आपका कर्त्तव्य पालन है।

अनुभव का खजाना है वृद्धावस्था

आज समाज में वृद्धों को अनुपयोगी मानने की घातक प्रवृत्ति बढ़ रही है। हम कम्प्यूटर, इन्टरनेट से अर्जित ज्ञान को ही सर्वोच्च समझते हैं, किन्तु ऐसा नहीं है कि ये आधुनिक उपकरण आपको नॉलेज दे सकते है, अनुभव नहीं। जीवन केवल नॉलेज के आधार पर नहीं जिया जा सकता, इसे जीने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती है और ये अनुभव मिलता है बुजुर्गों से। क्योंकि उनक पास जीवनभर का अनुभव होता है जो आपके लिए सदैव उपयोगी है। इतिहास में अनेकों ऐसी कथाएं हैं जो ये बतलाती हैं कि बुजुर्गों के अनुभव किस प्रकार उपयोगी है। वृद्धावस्था अनुभवों का इन्साइक्लोपीडिया होती है। इसका फायदा स्वयं उठायें और अपने बच्चों को उठाने दें।

विरासत को न भूलें

आधुनिकता विरासत को भूलने का नाम नहीं है। हमारी सभ्यता और संस्कृति में वृद्धों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है उनके सम्मान एवं सेवा की बात कही गयी है। भारतीय परम्परा में पितृपूजा एवं पित्रेष्टि जैसे यज्ञों का विधान मिलता है जो माता-पिता एवं वृद्धों के प्रति कर्त्तव्यों का ज्ञापक है। शास्त्रों में कहा गया है कि नित्य प्रति माता-पिता एवं वृद्धों की सेवा एवं सम्मान करने वाले व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल ये चार वस्तुएं नित्य प्रतिदिन बढ़ती हैं। मानव विधान के प्रथम निर्माता महर्षि मनु महाराज ने तो स्पष्ट लिखा है कि दुखित होकर भी माता-पिता का अपमान नहीं करना चाहिए, हमेशा उनका सम्मान करें।

वृद्धावस्था जीवन का वह काल है जिससे एक दिन प्रत्येक युवा हो रूबरू होना पड़ेगा। किसी शायर ने कहा है - **'जाकर न आने वाली जवानी देखी और आकर न जाने वाला बुढ़ापा देखा।'** इसलिए यदि आज आप वृद्धों को जैसा व्यवहार या महत्त्व देंगे, उनका सम्मान करेंगे, उनके प्रति सहानुभूति रखेंगे तो मानिये आप अपना कल सुधार रहे हैं। यदि आप आज अपने वृद्धों की उपेक्षा करेंगे तो कल आपके किशोर पुत्र-पुत्रियां भी आपकी उपेक्षा करेंगे। हम मनुष्य हैं, केवल मेडिक्लेम पॉलिसी, इंश्योरेंस और पैंशन फण्ड से वृद्धावस्था नहीं गुजारी जा सकती। मानवीय संवेदनाओं की जितनी आवश्यकता जीवन की अन्य अवस्थाओं में होती है उससे अधिक वृद्धावस्था में होती है। याद रखें वे केवल प्रेम, स्नेह, सम्मान चाहते हैं अतः अपने कल को बेहतर रखने के लिए आज वृद्धों को अपनाएं उन्हें सम्मान दें, सेवा करें।

- **अर्जुनदेव चढ्डा**, जिला प्रधान,
विज्ञान नगर कोटा, मो- 9414187428

दलित-उत्थान का प्रेरणादाय संस्मरण

प्रोफेसर शेर सिंह जाने माने राजनीतिज्ञ एवं भारत सरकार के पूर्व मंत्री थे। आप जाट गोत्र से थे। आप भागपुर गांव, तहसील बेरी, जिला झज्जर (हरियाणा) के निवासी थे। जब आप आठवीं कक्षा में थे तो उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुसार आपका विवाह जाट गोत्र की कन्या से तय हो गया।

आपके पिताजी **चौधरी शीशराम आर्य** गांव के बड़े जमींदार थे। उस जमाने में दलितों को सार्वजनिक कुँए से पानी भरने की अनुमति नहीं थी। स्वामी दयानन्द द्वारा जातिवाद को मिटाने के उद्घोष से प्रभावित होकर आपके पिताजी ने अपने खेत में स्थित कुँए को दलितों के लिए पानी भरने हेतु खोल दिया। यह घटना जनवरी 1926 की है। जब शेर सिंह के ससुराल पक्ष को मालूम हुआ कि आपने अपने कुँओं पर दलितों को चढ़ा दिया है, तो उन्होंने इस पर आपत्ति जतायी। शेर सिंह के पिता चौधरी शीशराम पर रिश्तो तोड़ने तक का दबाव बनाया गया। शेर सिंह के पिताजी ने कहा -मुझे रिश्ता तोड़ना मंजूर है मगर दलितों के साथ हो रहे अन्याय का समर्थन करना मंजूर नहीं। अन्त में शेर सिंह का **रिश्ता टूट गया** मगर स्वामी दयानन्द के सच्चे सिपाही जातिवाद को मिटाने में कामयाब हुए। बाद में जनसामान्य ने उनकी चेष्टा को समझा और दलितों को सार्वजनिक कुँओं से पानी करने का किसी ने कोई विरोध नहीं किया। शेर सिंह जी ने आगे चलकर **अंतरजातीय विवाह** किया एवं केन्द्र में मंत्री भी बने।

महार दलित समाज में पैदा होकर दलितों के लिए कुँए खुलवाने वाले **डॉ. भीमराव अम्बेडकर** का नाम तो सभी राजनीतिक पार्टियां लेती है मगर सवर्ण समाज में पैदा होकर दलितों के लिए संघर्ष करने वाला आपको कोई स्वामी दयानन्द का शिष्य ही मिलेगा। आर्यसमाज के जातिवाद को मिटाने के संकल्प में भागी बने, तभी यह देश बचेगा। यह प्रेरणादायक संस्मरण आज के समय में हम सभी को विश्व भातृ-भाव और आपसी सद्भाव का पावन संदेश देता है।

अपनी देह को हानि न पहुंचाते हुए धन का अर्जन करना चाहिए।

कन्या भ्रूण-हत्या : एक अभिशाप

कु० पूजा आर्या

हम कौन थे क्या हो गये हैं
और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर
ये समस्याएं सभी।।

हमारा देश भारत एक सर्प की भांति है, जिसका फन तो इक्कीसवीं सदी में घूम रहा है और पूंछ वहीं अट्ठारवीं सदी में अटकी पड़ी है। बेशक, आधुनिकता ने हमारे आसपास की बहुत-सी वस्तुओं को बदल दिया है लेकिन यह आधुनिक युग हमारे दिमाग के उस अंधेरे कोने में उजाला नहीं कर पाया जहाँ यह विचार पनपता है कि केवल बेटे ही माता-पिता का नाम रोशन करते हैं, बेटियाँ नहीं। समाज में कुछ ऐसे तत्त्व हैं जो दिमाग में पनप रहे एक छोटे से कीड़े को विशालकाय अजगर का रूप दे देते हैं, जो दिमाग के सद्विचारों को निगल लेता है और उसका परिणाम होता है कन्या भ्रूण-हत्या जैसा महापाप।

भारत देश में ''**नारी सर्वत्र पूज्यन्ते**'' इस शब्द का जयघोष तो हर स्थान पर सुनाई देता है मगर इस भारत देश में इसी नारी को इतनी अवमानना की जा रही है कि कन्या के जन्म से पूर्व ही हमारा समाज उसको समाप्त कर देने पर तुल गया है।

आज निर्दयी बन गया इंसान है, कोख माँ की बन रही श्मशान है।
लाश बेटी की कफन अर्थी बिना, माँ के हाथों में हुई वीरान है।।

इस बुराई ने सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश को भी तहस-नहस करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। यह विडम्बना ही कही जाएगी कि आज नारी ही आने वाली नारी की शत्रु बन रही है।

दादी की मैं प्यारी, पिताजी की मैं हूँ दुलारी।
माँ कहे राजकुमारी फिर मेरी ही गर्दन पर क्यों है कटारी।।

एक सर्वे के अनुसार पिछले 30 वर्षो में भारत में लगभग एक करोड़ कन्या-भ्रूणों की हत्या की गई है। लिंग निर्धारण और चयनित गर्भपात के चलते लड़कों के अनुपात में **प्रतिवर्ष 5 लाख** लड़कियाँ कम पैदा हो रही हैं। हरियाणा तो कन्या भ्रूण-हत्या के लिए और भी ज्यादा कुख्यात है जिसके कुछ जीवन्त उदाहरण मैं आपके सामने प्रस्तुत करने जा रही हूँ :-

1) 29 दिसम्बर 2012 को एक नवजात बच्ची के मुँह पर टेप लगाकर एक खाली प्लॉट में फेंक दिया गया।

2) कुछ समय पूर्व एक सरकारी अस्पताल में पॉलिथीन में एक बच्ची का शव पड़ा मिला, कोई बच्ची को पॉलिथीन में डालकर छोड़ गया था। दो कुत्ते उस पॉलिथीन को नोंच रहे थे, जाँच में पता चला कि बेटी का जन्म उसी दिन हुआ था।

3) कैथल में एक नवजात बच्ची को निर्दयी माँ ने जिन्दा ही झाँडियों में फेंक दिया, जिसे बाद में स्थानीय लोगों ने अस्पताल पहुंचाया और बच्ची की जान बच सकी।

अगर समाज से बेटियाँ इसी तरह समाप्त होती रहेंगी तो कल्पना की जा सकती है कि सृष्टि किस आधार पर चलेगी। यदि कन्या भ्रूण-हत्या इसी प्रकार होती रही तो लड़के वालों का अंश और वंश किस आधार पर बढ़ेगा? इस ज्वलन्त प्रश्न पर शायद किसी ने ध्यान नहीं दिया।

ये सच है पुत्ररत्न से वंश-बेल बढ़ जाएगी।
किन्तु बेटी बिना, पुष्प खिलाने वाली बेल कहाँ से आएगी।

आखिर इस घिनौने कृत्य के पीछे क्या कारण हैं? जहाँ तक मैंने विचार किया है इसके पीछे हमारी पारम्परिक सोच व समाज में नारी के खिलाफ बढ़ते हुए विभिन्न प्रकार के अत्याचार हैं। बेटों को बुढ़ापे का सहारा माना जाता है लेकिन वही बेटे बड़े होने पर माँ-बाप को वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं। यह सामाजिक सत्य है कि पुत्री ही पुत्र से अधिक माता-पिता का हित चिन्तन करती है। लोगों की इच्छा होती है कि बेटा उनके कुल का नाम रोशन करेगा, क्या लड़कियाँ कुल का नाम रोशन नहीं करती? सच तो यह है कि लड़के एक कुल का नाम रोशन करते हैं जबकि लड़कियाँ दो-दो कुलों का नाम रोशन करती है। इसके बावजूद भी उन्हें दोयम दर्जे का समझा जाता है।

मैं आपसे पूछती हूँ स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर, इंदिरा गाँधी, कल्पना चावला, किरण बेदी, सायना नेहवाल, साक्षी मलिक, सानिया मिर्जा ये सब नारियाँ नहीं हैं? इन सबने कुल का नहीं बल्कि देश का नाम रोशन किया है। कुल का नाम लड़के या लड़की होने से नहीं बल्कि उसके गुणों से रोशन होता है। और हाँ, कन्या भ्रूण-हत्या की बात आने पर किसी को यह सोचकर संतुष्ट होने की जरूरत नहीं है कि हमने तो ऐसा कुकृत्य कभी किया नहीं।

इस बुराई के पीछे जो कारण हैं उसके लिए हम सब जिम्मेदार हैं। दहेज प्रथा जैसी सामाजिक बुराई के कारण बेटी को परिवार पर बोझ माना जाता है, क्यों हम इस बुराई को समाप्त करने का प्रयास नहीं करते? आखिर क्यों हम अपने बेटों की शादियाँ बिना दहेज के नहीं करवा सकते? क्या हमारा बेटा अपाहिज है, जो आने वाली लड़की के दहेज पर निर्भर है?

दिन बदलता है, रात बदलती है।
बातों ही बातों में बात बदलती है।।
कौन करें श्रृंगार जिन्दगी का यहां,
कभी दुल्हन बदलती है तो कभी बारात बदलती है।।

वह कार्य करना उचित नहीं, जिसे करके पीछे पछताना पड़े।

शील उड़ाती चली हवा, मानव मानवता भूल गया

बगुला सीधा सादा, सफेद व सुन्दर होता है। जलाशय के किनारे-किनारे बहुत धीरे-धीरे चलता है। कहीं किसी जल-जन्तु को उसके पैरों से चोट न लग जाये। ध्यानावस्थित भी कितना, किसी सन्त महात्मा जितना। मछलियों को पता ही नहीं चलने पाता कि आसपास में कोई बगुला भी है, उन्हें पता तभी चलता है कि जब वे उसकी चोंच के चंगुल में आती हैं और झट से गटक ली जाती है। मछली को गटकने के बाद वह फिर शांतिमूर्ति बन जाता है और मछली के ध्यान में डूब जाता है। यही बगुला आज की सभ्यता का प्रतिनिधि है जो ऊपर से '**सन्त**' और भीतर से '**हन्त**' का सुलभ साक्षात् स्वरूप प्रदर्शित करता है। राजसिंहासन त्याग कर वैराग्य वरण करने वाले **महात्मा भर्तृहरि** ने ऐसे ही परिदृश्य को यों व्यक्त किया है –

'दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यायालङ्.कृतोऽपिसनं।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौन भयंकर।।'

कोई कितना ही बड़ा विद्वान् किन्तु दुर्जन हो वह उसी प्रकार त्याज्य होता है जिस प्रकार मणिभूषित भयंकर सर्प त्याज्य होता है। बिजली विभाग के बाबू ने लम्बे समय तक उपभोक्ताओं से बिल का भुगतान प्राप्त किया, उन्हें रसीदें भी दीं, किन्तु धन कोषागार में जमा नहीं किया। एक दिन पकड़ा गया, किन्तु तब तक आलीशान कोठियाँ व अन्य सुख-साधन जुटा चुका था और फरार हो चुका था। डाकघर का अदना-सा बाबू भिन्न-भिन्न योजनाओं में ग्राहकों का धन जमा करता रहा, किन्तु कोषागार में जमा नहीं किया। करोड़ो रुपये हड़पने के बाद बात खुली, अभियोग भी चला। एक दिन उसके पुत्र ने पुलिस के सामने पहचान की, रेल की पटरी पर शव पड़ा है, वह शव उसके पिता का है और पुष्टि के लिए कुछ अभिलेख भी शव की जेब में बरामद हुए। थोड़े ही दिनों में वह बाबू जीवित पकड़ में आ गया। अपने बचने के लिए किसी बेकसूर अबोध युवक को उसने मार दिया था। खूब सजे-धजे चमकदार वस्त्रों में युवक-युवती दो पहिया वाहन पर चढ़कर खेतों की ओर पहुंचे और काम करते किसानों के देखते-देखते एक गत्ते के डिब्बे को दिन दहाड़े वहाँ छोड़कर लौट गये।

डिब्बे को खोलकर किसानों ने देखा तो उसमें पाया एक नवजात शिशु के मुख में दूषित रक्त सना कपड़ा ठूंसा है और वह अंतिम श्वास ले रहा है। रात्रि के अंधकार में एक सुसज्जित आकर्षक युवती असहाय खड़ी सहायतार्थ मुखमुद्रा दिखाती प्रतीत हो रही है। करुण भाव से अपनी कार को रोककर सवार उसका हाल जानना चाहते हैं, लो इतने में उस युवती के कई साथी लुटेरे आ धमकते हैं और कार वाले का हाल चाल बिगाड़ देते हैं। पिट-पिटाकर व लुट-लुटाकर चीखते-चिल्लाते हुए वे सड़क पर और लुटेरे युवती सहित कार पर सवार होकर रफूचक्कर हो जाते हैं। मृतक आश्रित के रूप में चपरासी की ही सही सरकारी नौकरी पाने के लिए, सेवानिवृत्ति से पूर्व ही पुत्र पिता को मार देता है, अथवा नशाखोरी की लत की असीम तृष्णा की तृप्ति के लिए युवक माता-पिता व परिजनों की हत्या करने में संकोच, दया या भय का किंचित आभास नहीं करते हैं।

बहुमंजिले विशाल भवन समूहों में रहने वाले वैभव सम्पन्न परिवार अपनी रक्षा के लिए द्वार-प्रति द्वार रक्षक-अंगरक्षक रखते हैं किन्तु भीतर ही भीतर किशोर युवती, पुरुष, सेवक-स्वामी या किसी की भी हत्या हो जाती है। दूरदर्शन की शृंखलाओं में इन घटनाओं को चटखारे लेकर प्रदर्शित किया जाता है। एक दिन के अखबार में इस प्रकार की जितनी अवांछित घटनायें छपती हैं, यहाँ उनके शीर्षक मात्र लिखें तो भी लेख अधूरा ही रह जाएगा। ग्राम, विकास खण्ड, तहसील, जनपद, मण्डल, प्रदेश और राष्ट्र के सर्वोच्च स्तर पर राजनेता, व्यवस्थापक, अधिकारी व कर्मचारीगण देश के भौतिक विकास के लिए दिन-रात जुटे हुए हैं, पर इस विकास का प्रवाह भी विचित्र है। पानी की धारा ऊपर से नीचे की ओर स्वाभाविक रूप से बहती है, किन्तु मोटर मशीन के द्वारा उसे ऊपर भी चढ़ा लिया जाता है। पैसा राज्य कर्मचारियों की मशीनरी द्वारा करों के रूप में ऊपर राजकोष में एकत्रित होता है और यही मशीनरी पैसों को विकास के कार्यों के निमित्त ग्राम स्तर पर नीचे पहुंचाती है तो वह मशीनरी में ही अटक कर रह जाता है, पात्र तक नहीं पहुँचता और अपात्रों में ही बँट जाता है। जितने अधिक निरीक्षक पर निरीक्षक रखे जाते हैं उतने ही अधिक ग्रहण करने वाले हाथ बढ़ते जाते है और वितरण वाले हाथ कम पड़ जाते हैं।

ग्राम पंचायत की बात एक ओर छोड़िये, राष्ट्रीय अल्पमत को बहुमत में परिवर्तित करके अपने राज्यासन पर आरूढ़ रहकर मनमानी करने के लिए न केवल सक्षम, प्रत्युत स्वतंत्र भी बने रहते हैं। अपना या अपने उच्चासन के सम्मान का ध्यान न रखकर उसकी शक्ति को अत्याचार, अनाचार में प्रयोग करने लगते हैं और एक दिन दूर तक फैले हुए हाथों में हथकड़ियाँ पड़ जाती हैं, वे राज्यगृह से कारागृह में बन्द कर दिये जाते हैं। अपनी सुख-सुविधाओं के लिए वे बन्दी रक्षकों में गिड़गिड़ाते हुए निरीह बन जाते हैं।

वी.वी.आई.पी. हेलीकॉप्टर सौदे में कथित तौर पर दलाली दिये जाने के प्रकरण में **रक्षा मंत्री ए.के. एंटनी** की पीड़ा '**हमारे मंत्रालय में जब भी इस तरह का कोई विवाद उठता है तो मैं शर्मिन्दगी महसूस करता हूं**' (दै. हि. 28.2.2013) यदि ऐसी ही अनुभूति सभी नियंत्रकों की हो जाए तो स्वच्छ सकारात्मक संदेश

उपकार करना मित्र और अपकार करना शत्रु का का लक्षण है।

राजा प्रजा दोनों ही स्तरों पर प्राप्त होने लगे। आहार-विहार दो कार्य ऐसे हैं जिन्हें न मनुष्य को सिखाना पड़ता है और न ही पशुओं को। स्वाभाविक प्रक्रिया है कि जीवित रहने के लिए सभी आहार के लिए अपने मुख प्राकृतिक रूप से खोलते हैं। नन्हा बच्चा भी कोई वस्तु पकड़ता है तो सीधे मुख की ओर ले जाता है। यह खाद्य है अथवा अखाद्य है इसका ध्यान उसके माता-पिता आदि को रखना पड़ता है। पशुओं को हाथ भी नहीं चाहिए। वे सीधे मुख से ही यह कार्य करते हैं। वे खाने योग्य पदार्थ को ही खाते है और अखाद्य को कोई उन्हें खिला नहीं सकता। इसी प्रकार सन्तानोत्पत्ति के लिए मैथुन में रत होने के भी अपने नियम हैं। इन दो कार्यो को करने के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण की आवशकता नहीं। पशु मर भले जाए पर वे प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध कोई परीक्षण व प्रशिक्षण स्वीकार नहीं करते हैं।

पश्चिमी जगत् में गायों से अधिक मांस पाने की इच्छा से, उन्हें चारादाना में मिलाकर धोखे से मांस खिला दिया गया। उन्हें मैडकाऊ रोग हुआ, जिससे मांसाहारी मनुष्य भी रोगग्रस्त होकर मरने लगे। मानव जिसे बुद्धिमान श्रेष्ठ योनि का शीर्ष प्रतिनिधि कहा जाता है, जिसे यौन शिक्षा के नाम पर भोग-भिक्षा का पात्र विदेशी व्यवसायी संगठन इसलिए बनाते हैं कि मनुष्य असीमित यौनाचार के कारण एड्स रोग से बचने के लिए उनके निरोध खरीदें और जेब खाली करते रहें। खान-पान व भोग विकास में वे ऐसा ही प्रचार भारत में करते हैं। यह सारी वेदनाएँ इसीलिए है कि हमने वेद और वैदिक संस्कृति की शिक्षाओं की उपेक्षा कर दी है। वेद कहता है कि मनुष्य तीन सत्ताओं के सहारे चलता है। प्रथम प्रकृति के तत्त्वों से उसका शरीर बनता है, शरीर भी तब बनता है जब जीवात्मा उसके अन्दर बैठा चुका होता है। जीवात्मा भी शरीर-संसार संचालन के लिए शक्तियों को परमात्मा से प्राप्त करता है। आत्मा निकल जाने के बाद शरीर को नष्ट होने से कोई बचा नहीं सकता। हम शरीर को सजाते-संवारते रहते हैं और आत्मा की चिन्ता नहीं करते, प्रत्युत् उल्टे उसके परमात्मा की ओर अग्रसर होने के मार्ग में रोड़े बिछाते रहते हैं। शरीर को सजाना सभ्यता और आत्मा को सजाने की कला का नाम संस्कृति है। इसके लिए वेद ने एक सरल सूत्र हमको यों सुझाया है :-

संभले मलं सादयित्वा कम्बले दुरेतं वयम्।
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्रण आयूंषि तारिषत्।।
(अथर्व0 14.2.67)

...शेष पृष्ठ 17 पर

कन्या भ्रूण-हत्या ... पृष्ठ १२ का शेष

एक और कारण जिसकी वजह से समाज के लोग ये घिनौना कृत्य करने को मजबूर हो रहे हैं, वो है समाज में नारी के खिलाफ बढ़ते हुए विभिन्न प्रकार के अपराध। यह बताने की जरूरत नहीं है कि आज के समय में नारी कितनी असुरक्षित है? इस बुराई के पीछे हम, आप यहाँ तक की समाज का प्रत्येक नागरिक जिम्मेदार है। और जिम्मेदार हैं समाज के वो ठेकेदार जो नारी पर विभिन्न प्रकार की परम्पराओं की बेड़ियाँ तो लाद देते हैं लेकिन उस पर होने वाले अत्याचारों को दूर कने का प्रयास नहीं करते।

कन्या भ्रूण-हत्या के परिणाम सामाने आने लगे हैं जिसकी वजह से समाज में महिलाओं के खिलाफ बढ़ने वाले अपराधों वृद्धि हुई है। कई स्थानों पर तो लड़कियों की संख्या इतनी कम हो गई है कि पूर्वोत्तर राज्यों से लड़कियाँ खरीदकर उनसे शादी की जा रही है।

नारी की जो कमी हुई है, कहाँ से पैदा होंगे नर।
डोलियाँ खाली रह जाएंगी, वधू की चाह में भटकेंगे वर।।

हालांकि कन्या भ्रूण-हत्या को रोकने के लिए अनेक प्रकार के कानून बनाये गये हैं लेकिन इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि क्या सिर्फ कानून बना देने से यह समस्या सुलझा जाएगी? क्या गर्भ में आयी बेटी जन्म ले पाएगी? समाज की मानसिकता को देखकर तो ये संकेत मिलता है कि सिर्फ कानून बना देने से इस समस्या का समाधान संभव नहीं है। किन्तु उम्मीद का सूरज अभी पूरी तरह से डूबा नहीं है। सामाजिक ढाँचे को बिगाड़ने वाली इस बुराई को खत्म करने के लिए अनेक प्रकार के प्रयास हो रहे है जिसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आने लगे हैं, हरियाणा में लिंग अनुपात में पिछले कुछ समय में काफी सुधार हुआ है।

22 जनवरी 2015 को हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हरियाणा के पानीपत जिले से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की शुरुआत की। इस समस्या की गंभीरता का अंदाजा तो इस बात से लगाया जा सकता है कि इस बुराई को रोने के लिए हमारे देश के प्रधानमंत्री को आगे आना पड़ा।

निश्चित रूप से इसके लिए लोगों की मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा, सरकारी स्तर पर सख्ती करनी होगी। कानूनों को और कड़ा बनाना होगा तभी कन्या भ्रूण-हत्या के इस कलंक से निजात पायी जा सकती है।

अंत में मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि इस बुराई को रोकने के लिए हम सबको मिलकर प्रयास करने की जरूरत है। सामाजिक जागृति से ही बेटी का मरण रोका जा सकता है। जब बेटी सुरक्षित रहेगी, तभी ईश्वर की बनाई हुई यह सृष्टि सुचारु रूप से चल पाएगी।

अखण्ड दीप की अगर शिखा-सी, बेटी को जीवन दो।
जग की इस संजीवनी को, शक्ति गति और उन्नति दो।।

- कु0 पूजा आर्या

जो दूसरों को क्षति पहुंचाना चाहता है, वह अपनी क्षति पहले कर लेता है।

रसो वै सः

आचार्य दयाशंकर जी

'प्रयोजनंमनुदि्दश्यमन्दोऽपि न प्रवर्तते'

आचार्य शंकर द्वारा प्रणीत यह सूत्र संसार के मानव ही नहीं अपितु प्राणी मात्र की प्रवृत्ति को व्याख्यायित कर रहा है कि बिना प्रयोजन के मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता। मनुष्येत्तर प्राणियों में इतना अन्तर अवश्य है कि पशु देखकर प्रवृन्त होता है, इसीलिए उसे पशु की संज्ञा दी गई है।

'पश्यति इति पशुः'

अर्थात् बिना विवेक के मात्र देखकर क्रिया में प्रवृत्त होता है जैसे घास देखी तो तुरन्त खाने में प्रवृत्त हो गया, जल देखा तो पीने में प्रवृत्त हो गया किन्तु जो अपनी प्रवृत्ति है वह सुख के लिए है। संसार में कोई भी प्राणी शायद ऐसा नहीं जो सुख न चाहता हो, जो आनन्द-शान्ति न चाहता हो। उसके जीवन का प्रति क्षण प्रति श्वास तथा प्रत्येक बढ़ता कदम सुख, शान्ति तथा आनन्द की दिशा में है। इस संदर्भ में प्रश्न खड़ा होता है कि प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कदम, सम्पूर्ण जीवन की अभिलाषा शान्ति, सुख, आनन्द की प्राप्ति के लिए है तो क्या उसकी अभिष्ट सिद्धि हो रही है? क्या वह शान्त है, क्या वह आनन्दित है? नहीं, अधिकतर उत्तर यही प्राप्त होता है कि नहीं।

यह एक विचित्र-सी बात है कि इतना प्रयत्न करने के उपरान्त भी तृप्ति नहीं होती। एक व्यक्ति इच्छित स्थान पर जाना चाहता है, पहुँच जाता है किन्तु यहाँ इस क्षेत्र में क्यों नहीं पहुंच पाता? इसका सीधा सा उत्तर है कि किस शान्ति और आनन्द की दिशा में कदम बढ़ा रहा है, वह मार्ग उधर जाता ही नहीं है और जो व्यक्ति दिशाहीन चलता है, वह सम्पूर्ण जीवन चलता रहे, गन्तव्य पर जाने के बजाए उससे दूर और दूर चला जाता है।

इस क्षेत्र में अक्सर व्यक्ति अंधा होता है क्योंकि जिन चर्म चक्षुओं से वह प्राकृतिक पदार्थो का ही अवलोकन कर सकता है किन्तु इन्हीं चक्षुओं से यदि वह अप्राकृतिक व्यापक तथा अगोचर सत्ता को देखना चाहे तो यह पूर्णतः असम्भव है। यही अन्धविश्वास व्यक्ति की शान्ति में सर्वाधिक बाधक है। यही अविद्या अन्तःप्रकाश में अवरोध उत्पन्न करती है।

महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन में कहा है-

'अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पंच क्लेशाः'

अर्थात् दु:खों के पांच मूल कारण हैं अविद्या अर्थात् मिथ्याज्ञान जो पदार्थ जैसा है उसके विपरीत मानना और उसके अनुसार आचरण में लाना अविद्या है। अस्मिता अर्थात् द्रष्टा जीवात्मा जो ज्ञान का अनुभव करता है तथा साधन जिससे ज्ञान का अनुभव होता है अर्थात् बुद्धि इनको एक मान लेना। राग-सांसारिक पदार्थो के प्रति आकर्षण तथा उसी में लिप्त होना। द्वेष -'**द्वेषो द्वत्वोभावः**' अर्थात् जहाँ द्वत्व भाव उत्पन्न हो जाए कि यह मेरा, यह पराया। अपनो से प्रेम और परायों से भेदभाव आदि द्वेष कहलाता है। अभिनिवेश-मृत्यु जो शास्वत सत्य है उसको समझते हुए भी मृत्यु से भय लगना। ये पाँच प्रकार के दु:खों को उत्पन्न करने वाले मूल कारण हैं। जिन व्यक्तियों की चर्चा हम कर रहे हैं, कहीं न कहीं इन क्लेशों के घेरे में हैं। इन व्यक्तियों के भावों में इतनी अविद्या भरी पड़ी है कि देखते तथा सुनते हुए भी बधिर है।

गंगा जो एक पवित्र जल की धारा है। हिमालय से अनेक प्रकार की औषधियों से मिश्रित होकर जो जलराशि की एक धारा प्रवाहित हो रही है वह औषधियों के कारण से अनेक रोगों में लाभकारी तो हो सकती है किन्तु जो लोग मानते हैं कि हमारे पाप धुल जाएंगे, स्वर्ग में अनायास स्थान मिल जाएगा आदि मिथ्या और भ्रामक धारणा लिये बैठे हैं। यही उनकी अविद्या है जो दु:खों का कारण है। ऐसा व्यक्ति मृगतृष्णा के समान मारीचिका में जैसे हिरण जल के मिथ्या आभास में जल ढूंढता हुआ जीवन समाप्त कर लेता है, ठीक वही स्थिति उस व्यक्ति की होती है। केवल भौतिक आडम्बर तथा पाखण्ड के भयानक जाल में इस प्रकार फंस जाता है कि उसका भ्रम उसको संशयों से बाहर निकलते ही नहीं देता। '**संशयात्माविनश्यति**' संशय में घिरे व्यक्ति अनमोल दुष्प्राप्य जीवन को नष्ट कर देता है।

हमने पूर्व में बताया है कि व्यक्ति यह सोचकर कदम बढ़ाता है कि इससे मुझे सुख की प्राप्ति होगी फिर भी वह कदम दु:खों की ओर जा रहा है। इसके लिए विवेक अत्याधिक आवश्यक है। जो हमें उचित अथवा अनुचित का बोध कराता है। बीज कोई भी हो वह सूक्ष्म, गोल और एक-से प्रतीत होते हैं किन्तु वह किस वृक्ष का है, यह जानने के लिए विवेक की आवश्यकता है। यदि कोई यह सोचकर कि यह फलदार अथवा आम का बीज है, कंटीली झाड़ी बो दे तो स्वाभाविक है उस पर कांटे ही आएंगे। उसमें आम कभी भी नहीं लग सकते क्यों न उसे आम समझकर बोया गया हो। कई लोग कहते है कि जिस वस्तु पर जैसा विश्वास बना ले, वह वैसा ही हो जाता है। कैसी बेतुकी बात करते है ऐसे लोग। यदि ऐसा ही है तो उन लोगों के घर में गाय, भैंस

जितेन्द्रिय शासक ही प्रजा को अपने वश में कर सकता है।

बांधने की कोई आवश्यकता नहीं है। पानी का लोटा भरा और यह समझकर कि यह दूध है, उसे पी लें तो दूध का काम हो जाएगा। चाय में भी शक्कर की जगह बालू डालकर मीठा कर लें तो क्या बालू शक्कर का काम कर देता है? नहीं, प्रत्येक भौतिक पदार्थ अपने-अपने स्वभाव में बंधा हुआ है, कभी किसी का स्वभाव किसी भी परिस्थिति में नहीं बदल सकता। मेरे एक मित्र ने मुझसे कहा कि मैं हाथ में 5 से 10 मिनट तक आग रख सकता हूँ और मेरा हाथ भी जलेगा नहीं। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, मैंने कहा करके दिखाओ। उस मित्र ने एक कागज पर '**आग**' लिखा और हाथ में लेकर बैठ गया। बोला देखिए मेरे हाथ में '**आग**' है। अब देखा जाए तो कुछ हद तक उसकी बात सही है, बोलने में तो ऐसा ही कहा जा सकता है किन्तु ये एक शब्द मात्र है। इस प्रकार के व्यक्ति शब्दों से खेलते हैं, शब्द मात्र ज्ञान कराने हेतु हैं। तद्नुरूप आचरण आवश्यक है।

प्यास बहुत तीव्र है और '**पानी**' ऐसा बोले तो क्या प्यास की निवृत्ति हो जाएगी? नही, कदापि नहीं। शान्ति और सुख की खोज में आज व्यक्ति केवल शब्द मात्र से प्राप्ति चाहता है। वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि धर्मशास्त्र आन्तरिक ज्ञान हेतु शब्द प्रयोग मात्र हैं। उसके अनुरूप जीवन को ढालने से उस ज्ञान को व्यवहार में लाने से अविद्या का नाश तथा आनन्द की प्राप्ति होगी। इसके विपरीत जो केवल शब्द मात्र से आनन्द और शान्ति चाहे तो ये कदापि नहीं हो सकता। वह विद्वान तो हो सकता है किन्तु ज्ञानी नहीं और ज्ञान के बिना मुक्ति अर्थात् मोक्षानन्द असंभव है। एक रोगी बुखार, खांसी, जुकाम आदि रोग से पीड़ित वैद्य के पास गया और बोला वैद्य जी मुझे औषधि दीजिए। वैद्य जी ने सम्बंधित औषधियाँ एक कागज पर लिखकर उसको दी। उस रोगी ने बड़ा अद्‌भुत काम किया और वह उस कागज पर लिखे शब्दों को प्रतिदिन श्रद्धा से जपना शुरु कर दिया, उसे विधिवत् उन सभी शब्दों को कंठस्थ भी कर लिया। प्रात: सायं उच्च ध्वनि से उन शब्दों का पाठ करने लगा मगर उसका रोग ठीक नहीं हुआ बल्कि और बढ़ गया। उसे घृणा हो गयी, कहने लगा वह वैद्य तो किसी काम का नहीं, बेकार है।

तब उसने सोचा कि शायद पाठ करने से नहीं बल्कि गले में लटकाने से कुछ लाभ हो। उसने औषधि लिखे कागज को एक कपड़े में लपेटकर गले में लटका लिया। किन्तु उसके रोग फिर भी ठीक नहीं हुए और लगातार बढ़ते गये। इसे आप क्या कहेंगे, अंधविश्वास, अविद्या या कुछ और? आज आनन्द और शान्ति चाहने वाला व्यक्ति यही कर रहा है। केवल वेदपाठ करता है, वेदानुकूल आचरण नहीं। गीता पाठ करता है किन्तु गीता के उपदेशों, आचरण से कोसों दूर है। गीता याद करने मात्र से कोई श्रीकृष्ण नहीं बन सकता, योगदर्शन के सूत्रों को कंठस्थ करने मात्र से कोई ऋषि पतंजलि नहीं बन जाता। हाँ, उसमें एक बड़ी हानि होने की संभावना जरूर होती है कि उसमें अहंकार आ जाता है इसलिए ऐसे विद्वान् प्राय: घमण्डी हो जाते हैं जैसे रावण को घमण्ड हो गया था। जो वेद, शास्त्रों के ज्ञान को आत्मसात् कर तदनुकूल आचरण में विधिपूर्वक ले आता है वही ज्ञानी है। शान्ति तथा आनन्द का वास्तविक पात्र वही होता है। वह ज्ञानी स्वयं प्रकाशमान होता हुआ समाज को भी प्रकाशित करता है। श्रीराम, श्रीकृष्ण, महर्षि दयानन्द सरस्वती इसी श्रेणी में आते हैं। जो लोग आनन्द और शान्ति की खोज में सुख की ओर कदम बढ़ा रहे हैं वे इस शरीर से क्षणिक सुख तो प्राप्त कर सकते हैं मगर आत्मिक सुख की अनुभूति नहीं कर सकते। आप गर्मी से पीड़ित है वातानुकुलित क्षेत्र में आ गये, गर्मी दूर हो गयी और आप सुखी हो गये। सर्दी लग रही है, अग्नि के पास चले गये, आपकी सर्दी दूर हो गयी। ऐसे में आपको जो सुख मिला वो केवल शरीर से सम्बंधित है। ये मन का विषय है, आत्मा का नहीं। मन की इच्छाओं और तृष्णाओं का जीवन में कभी अन्त नहीं हो सकता।

महर्षि यम मन की तृष्णा के विषय में नचिकेता को कहते हैं -

'नहि वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः'

अर्थात मनुष्य मानसिक तथा भौतिक रूप से कभी भी शान्त तथा तृप्त नहीं हुआ, आदि शंकराचार्य बहुत सुन्दर बात कहते हैं -

'तृष्णा न जीर्णावयमेव जीर्णाः'

अर्थात् हम बूढ़े हो गये किन्तु ऐष्णाएं बूढ़ी नहीं हुई। ऐसे ही '**भोगा न भुक्ताः वयमेवभुक्ता**' अर्थात् उपभोग्य वस्तुओं को हमने नहीं भोगा अपितु उन्होंने हमको भाग लिया, शक्ति सामर्थ्यहीन बना दिया।

इस प्रकार आज का बाहुल्य जन शान्ति और आनन्द की दौड़ में विपरीत दिशा में दौड़ रहा है जिसका परिणाम है कि वह लक्ष्य से ओर दूर होता जा रहा है। **महर्षि दयानन्द सरस्वती** ने सत्यार्थप्रकाश के **11वें समुल्लास** में आडम्बरवाद की धज्जियाँ उड़ाकर वास्तविक मार्ग का सटीक वर्णन किया है। सत्यार्थप्रकाश को पढ़े और शान्ति व आनन्द के मार्ग की ओर बढ़ें। सच्चा आनन्द और शांति उस सच्चिानन्द रूप परमेश्वर में है और वह परमेश्वर कहीं बाहर नहीं, किसी प्रतिमा में नहीं, किसी क्षीर सागर अथवा कैलाश पर नहीं बल्कि प्राणी मात्र के हृदय में विराजमान है। धीर, विवेकी मनीषी लोग उस परमानन्द को अपनी आत्मा में ही देखते हैं, उन्हीं को शाश्वत सुख प्राप्त होता है, अन्धों को नहीं।

- आचार्य दयाशंकर,
संस्कृत प्राध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

मानव देह के साथ जन्म से ही एक सौ शक्तियाँ उत्पन्न होती है।

मंत्रों का करें विशुद्ध उच्चारण

भावेश मेरजा

आर्यसमाज की साप्ताहिक सभा जिसे आजकल **साप्ताहिक सत्संग** कहा जाता है, में हवन किया जाता है और साथ में कभी-कभी सन्ध्या भी। स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण का पाठ भी किया जाता है। कहीं इनके प्रथम 5-5 मंत्र, कहीं प्रथम 11-11 मंत्र और कहीं पूरे प्रकरण। हवन के अन्त में शान्तिपाठ '**औं द्यौः ...**' इस यजुर्वेदीय मंत्र का पाठ करने की परम्परा भी प्रचलित है। कई आर्यसमाजों में हवन के पश्चात् ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का पाठ भी किया जाता है। '**सर्वे भवन्तु सुखिनः ...**' को भी हमने अपनी विधि का अभिन्न अंग बना लिया है और भी बहुत कुछ।

फिर भी यह सच में गर्व की बात है कि आर्यसमाज में वेद मंत्रों का पाठ होता है, नहीं तो आजकल प्रायः सभी पौराणिक मत-सम्प्रदायों द्वारा (कुछ अपवादों को छोड़कर) की जाने वाली पूजा, प्रार्थना, संकीर्तन आदि के कार्यक्रमों में वेदपाठ के लिए कहाँ कोई गुंजाइश बची है। साम्प्रदायिक तथाकथित प्रार्थनाओं, भजनों, आरतियों, कथाओं तथा स्तवन आदि में वेद मंत्रों के पाठ के लिए कोई स्थान ही नहीं है। ऐसे में आर्यसमाजों में वेदपाठ की परम्परा जीवित है, यह बहुत बड़ी बात है।

वेदपाठ त्रुटिरहित हो, मधुर-कर्णप्रिय स्वर में हो, गाम्भीर्यपूर्ण हो, समवेत-सभी सदस्यों द्वारा एकसाथ हो, आगे-पीछे उच्चारण न हो, सही उच्चारण हो- इसके लिए आर्यसमाज के सदस्यों को पर्याप्त जागरूकता रखनी चाहिए और आर्यसमाज में इसके प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

सौ व्यक्तियों के द्वारा किये गये एक अव्यवस्थित वेदपाठ से पांच ही सदस्यों द्वारा किया गया व्यवस्थित वेदपाठ अधिक प्रभावोत्पादक होता है। यह अनुशासन का विषय है। जिन सदस्यों का पाठ उत्तम होता है उनके साथ-साथ अन्यों को भी उनसे धीमे स्वर से पुस्तक देखकर बोलने का अभ्यास करना चाहिए। कुछ ही सप्ताह में सन्तोषजनक सुधार हो सकता है। 'मेरा उच्चारण सर्वश्रेष्ठ है, उसमें कोई त्रुटि नहीं है' ऐसी जिद पालना हमें शुद्ध उच्चारण से वंचित कर देता है। अधिक से अधिक शुद्ध उच्चारण हो सके इसके लिए नम्रतापूर्वक यत्न करते रहना चाहिए।

सन् 1992 में स्वामी जगदीशवरानन्द जी भरूच आर्यसमाज के शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने पधारे हुए थे। एक दिन विश्राम काल में मैंने स्वामी जी से प्रार्थना की -स्वामी जी, मैं सन्ध्या, हवन के मंत्रों का आपके सम्मुख पाठ करता हूँ, क्या आप मेरी इस पुस्तिका में जहाँ-जहाँ मेरे उच्चारण में कुछ दोष होते हैं, उन सभी को संकेतिक करने का कष्ट करेंगे? स्वामी जी ने मेरी विनती मान ली। मैंने पाठ किया, उन्होंने मेरी पुस्तिका में **लगभग 60 अशुद्धियों** के संकेत किये और शुद्ध उच्चारण कैसे किया जाए यह भी बताय। मैंने धन्यवाद किया तो हंसते हुए बोले कि मेरे लिए भी यह पहला अनुभव है कि किसी व्यक्ति ने अपने उच्चारण में होने वाली अशुद्धियों को दूर करने के लिए मुझसे सहायता के लिए ऐसी प्रार्थना की हो और इतना कहकर वे मुस्कुराने लगे। स्वामी जी बड़े हंसमुख स्वभाव के थे, ये तो सभी को ज्ञात है।

शील उड़ाती चली हवा... पृष्ठ १४ का शेष

भावाशय है कि परस्पर समझदारी से संभलकर चलने वाले व्यक्ति अपनी कामनाओं पर मल व दूषित दुर्व्यसन की परत नहीं चढ़ने देते हैं और निश्चयपूर्वक श्रेष्ठ यज्ञपरक परोपकारी कार्यों को करते हुए, अपने शरीर व आत्मा को प्रखर-परिशुद्ध रखकर अपने जीवनों को बढ़ाते हैं। नीतिवक्ता महात्मा विदुर जी ऐसा ही समर्थन करते प्रतीत होते हैं :-

जिता सभा वस्त्रवता मिष्टाशा गोमता जिता।
अध्वाजितो यानवता सर्वशीलता जितम्।।
शीलं प्रधानं पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुमि।।

वस्त्रों के साज-शृंगार से सभा को, गोपालन से मिष्ठान्न को, वाहन से मार्ग को जीत सकते हैं किन्तु शील-शालीनता से सभी कुछ जीता जा सकता है। मानवीय गुणों में शील ही प्रधान है। इसके नष्ट हो जाने पर जीवित रहने का कोई प्रयोजन नहीं, चाहे धन-धान्य, बन्धबान्धव कितने ही हों। पशु प्राण संरक्षिका मेनका गांधी लाख बतायें कि अण्डे मल तुल्य त्याज्य हैं किन्तु आधुनिक सभ्यता उन्हें शाकाहारी बोलकर खाती है। दूरदर्शन की शृंखलाओं में देवी-देवताओं के अभिनय करने वालों से जब उनके आहार के विषय में पूछते हैं तब उनका यह उत्तर कि उन्हें '**नॉन वेज**' पसंद है, तो उनके प्रति उमड़ी श्रद्धा तो घृणा में बदल ही जाती है, वह चित्रकथा भी निराधार हो जाती है। मानव का शील ही प्राण है जिसके बिना आज की सभ्यता निष्प्राण, निष्फल ही नहीं, मानवता की प्राण घातक भी है। सच्चरित्र मनुष्य अपने शील स्वभाव की रक्षा करके ही प्रभु प्रजा सभी का प्यारा बनता है, शील-सौजन्यता के नाश से बस पशुओं से भी नीचे गिरकर घृणा का पात्र बन जाता है।

- देवनाराण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका प्रथम, रामघाट मार्ग,
अलीगढ़ -202001, उत्तर प्रदेश।

यदि शिष्य गुण सम्पन्न है, तो वह अपने आचार्य के समकक्ष माना जाता है।

चल उड़ जा रे पंछी

आचार्य सत्यप्रकाश
आचार्य, आर्ष महाविद्यालय
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आप मुस्कुराते भी हैं तो भी आपकी मुस्कुराहट सिर्फ उदासी की खबर देती है। आपके होंठ मुस्कुराते हैं लेकिन कोई गहरे उनमें देखें तो वहाँ भ आंसू छिपे हैं। आप चलते हैं लेकिन ऐसे जैसे न मालूम कितनी जंजीरे आपके पैरों में बंधी हों। नृत्य नहीं है वहाँ। आप नाच तो सकते ही नहीं, क्योंकि नाच तो वही सकता है जिसे भीतर की परम स्वतंत्रता का अनुभव हुआ हो। नृत्य तो एक उत्सव है, एक धन्यवाद है। मीरा ने कहा है - '**पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे**' लेकिन पैरों में घुंघरू तभी बांधे जा सकते हैं, जब आत्मा की भनक पड़ी हो। उसके बिना कोई गीत नहीं। उसके बिना जीवन एक बोझ है, एक सन्ताप, एक दु:ख, एक दु:ख स्वप्न और बड़ा लम्बा दु:ख स्वप्न। जिससे जागने का कोई उपाय नहीं दिखाई पड़ता। जिससे हटने का कोई मार्ग नहीं दिखाई पड़ता।

पक्षी ने गीत गाया। खुला आकाश सामने था, पंख पास थे। गीत गाने में और क्या चाहिए? पंख हों और खुला आकाश हो। अन्तहीन आकाश हो और अन्तहीन उड़ने की क्षमता हो और गीत के लिए चाहिए क्या? आपके भीतर भी गीत उस दिन उठेगा जिस दिन आप भी पंख फैलायेंगे और खुले आकाश में उड़ जायेंगे।

कभी आपने देखा है सांझ को, आकाश में उड़ते हुए अबाबील? उड़ते थी नहीं, पंखों तक को ठहराकर तिरते हैं। उनके तिरने में ही ध्यान है। सांझ को आज देखें, जब अबाबील अपनी ऊंचाइयों से उतरने लगें, तब वे तैरते तक नहीं, तब वे उड़ते ही नहीं। तब श्रम बिल्कुल नहीं है, सिर्फ हवा पर पंख फैलाकर ठहरे होते हैं। उस क्षण में, जिसको गीता '**स्थितपुंज**' कहती है, वैसी उनकी चित्तदशा होती होगी। जिस दिन आप भी खुले आकाश में बिना किसी प्रयत्न के उड़ पायेंगे, उस दिन नृत्य पैदा होगा, उस दिन गीत पैदा होगा। उस दिन आप धन्यवाद दे सकेंगे। पक्षी ने गीत गाया, पंख फैलाये और खुले आकाश में उड़ गया। बुद्ध ने कहा प्रवचन पूरा हुआ और कहने को है ही क्या?

कठिन हुआ होगा सुनने वालों को समझना क्योंकि वे शब्द सुनने आये थे, सिद्धान्त सुनने आये थे। बुद्धिमान व्यक्ति का रस सत्य में होता है, सिद्धान्त में नहीं। सिद्धान्त को क्या खायेंगे, पीयेंगे क्या करेंगे? आपको प्यास लगी हो और कोई जल का सिद्धान्त आपको समझाये -एच टू ओ। आप क्या करेंगे? आपको प्यास लगी हो, तो एच टू ओ से प्यास तो नहीं बुझती। यह सूत्र बिल्कुल सही होगा, लेकिन इस सूत्र का आप क्या करेंगे? इसे गर्दन में बांधे घूमते रहे, कंठ इससे ठंडा नहीं होगा, शीतल नहीं होगा। आप कहेंगे पानी चाहिए, एच टू ओ नहीं। पानी प्यास को बुझा देगा। पानी कोई सिद्धान्त नहीं है। सत्य कोई सिद्धान्त नहीं है। सत्य एक अनुभव है, जैसे जल कंठ से उतरता है, तब जो अनुभव होता है, वह अनुभव बड़ा अलग है।

बुद्ध के पास जो लोग सिद्धान्त सुनने आये होंगे, चौंक गये होंगे। बुद्ध के दिये गये पानी को वे न समझे होंगे। वे सुनने आये थे एच टू ओ के सम्बंध में कोई खबर, कोई सिद्धान्त, कोई विश्लेषण, कोई प्रत्यय, कोई कन्सेप्ट, कोई बौद्धिक धारणा। उन्हें बड़ा अजीब लगा होगा। यह व्यवहार समझ में न आया होगा। यह कैसा प्रवचन?

हम सुनने आये थे और बुद्ध ने दिखाने की कोशिश की। हम समझने आये थे और बुद्ध ने जीवन्त प्रतीक सामने खड़ा कर दिया। उन्होंने इशारा किया। उन्होंने कहा- देखो, यह पक्षी वातायन पर बैठा, इसे घर न बनाया। ऐसे ही तुम संसार पर बैठना लेकिन इसे घर मत बना लेना। फंख फड़फड़ाना। कहीं भूल मत जाना। विस्मृति न हो जाए। सुरति बनी रहे। गीत गाना क्योंकि गीत ही प्रार्थना है। आप गा सकें तभी आप भक्त हो सकते हैं। आप गा सकते हैं तभी परमात्मा से किसी तरह का सम्बंध जोड़ सकते हैं। आपके उदास चेहरों से मंदिरों की तरफ कोई रास्ता नहीं जाता। आपके बोझिल मन से परमात्मा की तरफ कोई स्वर नहीं उठता। आप दु:ख से भरे, थके-मांदे, हारे-पराजित। आपके हृदय से ऐसी कोई गंध नहीं उठती, जो परमात्मा के चरणों को छू ले। जब आप गायेंगे, तभी आपका हृदय पूरा का पूरा खिलता है।

गीत पक्षियों के फूल हैं। वृक्षों में फूल लगत हैं, पक्षियों में गीत। आपका गीत कहाँ है? और जब तक आपका गीत नहीं लगा, तब तक आप अधूरें हैं, पंगु हैं। आपका वृक्ष अपनी पूर्णता पर नहीं पहुंचा। क्या है आपका गीत? धर्म उसी गीत की तलाश है। उसे धर्मो ने प्रार्थना कहा है, पूजा कहा है, अर्चना, आराधना कहा है, ध्यान कहा है, स्तुति कहा है। ये सारे नाम है लेकिन बात एक ही है।

जिस दिन आपके भीतर से अस्तित्त्व के प्रति आभार और अहोभाव का गीत उठता है, जिस दिन आप कह पाते हैं मैं धन्यभागी हूँ क्योंकि मैं हूँ। बस मेरा होना पर्याप्त तृप्ति है, कुछ और नहीं चाहिए। जब तक आप कुछ और मांगते हैं, तब तक शिकायत उठती है क्योंकि आपके मांग मेंही छिपा है कि आपको जो मिला है, वह काफी नहीं है। आपकी मांग कहती है और चाहिए, तब तैं धन्यवाद दे सकता था। जो मुझे मिला है, वह कम है। प्रार्थना कहती है, जो मुझे मिला है, वह ज्यादा है। जितना मुझे मिलना था, मेरी पात्रता थी, उससे बहुत ज्यादा है। मैं हर हालत में धन्यवाद दे रहा हूँ। मेरा होना ही पर्याप्त तृप्ति है।

(शेष अगले अंक में)

किसी एक विषय पर चित्त को स्थिर-एकाग्र करना ध्यान है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ

*प्रिय पाठकों, गुरुकुल के पूर्व छात्र जो अब समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर वैदिक संस्कृति और वेदों का प्रचार-प्रसार कर समाज को नई दिशा दे रहे हैं, ऐसे महानुभावों हेतु '**गुरुकुल-दर्शन**' द्वारा '**गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ**' नाम से यह स्तम्भ आरम्भ किया गया है। इसके अन्तर्गत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्रों के अनुभव, अध्ययन के समय की मधुर स्मृतियों को प्रकाशित किया जाएगा। आशा करते हैं कि आपको यह स्तम्भ पसंद आएगा।*

प्रो. वेदकुमार 'वेदालंकार'
डॉ. पतंगे हॉस्पीटल, पतंगे रोड
मु. पो.-उमरगा, जिला-उस्मानाबाद
महाराष्ट्र-413606

गतांक से आगे... तब एक नियम बनाया गया जिसे डकार आ जाए, वह भोजन बंद कर दे। भोजन-पंक्ति के बीच टहल रहे पंडित जी सब पर नजर रखते थे और किसी को डकार आते ही उसे उठा देते थे। ऐसे अवसर पर प्राय: एक विचित्र और मनोरंजक बात हो जाती थी। जैसे ही किसी लड़के को डकार आती, तो वह उठाये जाने के डर से धीरे-से डकार लेता था कि कहीं पंडित जी ना सुन लें, किन्तु बाल स्वभाव की एक विचित्र प्रवृत्ति तब दिखाई देती थी। डकार वाला बच्चा आवाज दबा लेता था, किन्तु पास बैठा हुआ लड़का क्यों चुप बैठता, वह जोर से पंडित जी को पुकारता था- पंडित जी इसे डकार आ गई। उस बेचाने को मन मसोसकर उठ जाना पड़ता था। फिर ऐसे छला गया लड़का बाद में कई और लड़कों की शिकायत करके उन्हें थाली पर से उठा देता था। भोजन-भंडार में घुसकर चुपके से कोई चीज उठा लेना एक-दो विद्यार्थियों की आदत थी। स्टोर-रूम से गाजर, मूली या जो भी हाथ लगे, उठाकर भाग जाते थे।

एक लड़का था जिसे हम '**हरिया**' कहते थे। पक्का चोर और चालाक था, किन्तु चोरी करते पकड़े में नहीं आता था। एक बार कुछ मित्रों ने उसे पकड़वाने की एक युक्ति निकाली। भोजन-भंडार के जिस कमरे में गोभी, गाजर, मूली, आलू इत्यादि पदार्थ रखे होते थे, उसके बाहर की ओर खुलने वाले दरवाजे के नीचे बड़ा-सा छेद था। शरारती मित्रों ने हरिया से जाकर कहा-देखो, भंडार में आज लाल-लाल गाजर आयी है। तू दरवाजे के छेद में हाथ डालकर चुपके से निकाल लें। हम पहरा देते हैं, कोई आएगा तो झट से बता देंगे। तू जा...। हरिया से ऐसा कहकर दो मित्र बाहर पहरा देने लगे, तभी एक अन्य छात्र ने भंडार में जाकर भंडारी को सूचना दे दी कि अभी हरिया भंडार से गाजर चुराएगा। कुछ देर बाद जैसे ही हरिया ने दरवाजे के अंदर हाथ डाला, भीतर खड़े भंडारी ने उसका हाथ पकड़ लिया। इस तरह से अपराधी रंगे हाथों पकड़ा गया और सूचना देने वाले मित्रों को एक-एक गाजर ईनाम में मिली।

यह हरिया सचमुच था बड़ा चालाक। पूरा लोभी और चटोर था। चोरी करने में कहीं छिप जाने में पूरा माहिर। एक बार भंडार में किसी कर्मचारी ने देख लिया कि सुनसान दोपहरी में हरिया भंडार में घुस आया है। भंडारी ने तुरन्त बाहर जाने के सारे दरवाजे बंद करवा दिये और सबने मिलकर हरिया की तलाश शुरु कर दी। सारे कमरे छान मारे मगर हरिया का कोई पता नहीं चला। सब निराश हो गये और अचम्भे में आ गये कि ये हरिया गया तो गया कहाँ? तभी एक सेवक का ध्यान वहां रखे एक बड़े डेगचे की ओर गया, सोचने लगा कि उस डेगचे में कुछ है। नहीं, फिर इस पर ढक्कन क्यों रखा हुआ है। ऐसा सोचकर जैसे ही उसने डंडे से ढक्कन हटाया तो भीतर से श्रीमान हरिया बाहर निकल आये। भंडारी ने हरिया को शाम तक उसी डंडे से बांधे रखा और फिर आचार्य जी के सुपुर्द कर दिया।

भोजन-भंडार की ही एक-दो और घटनाएँ याद आती हैं। भंडारी जी के कमरे में दो थालों में भरे हुए गुलाब-जामुन रखे हुए थे, जो अगले दिन त्योहार पर सबको दिये जाने थे परन्तु कुछ छात्रों का जी पहले ही दिन गुलाब जामुन खाने को ललचाया। बहुत सोच विचार करने के बाद मित्रों ने जो योजना बनाई, वह इस प्रकार थी - भंडारी के कमरे की खिड़की में जाली लगी हुई थी। लड़कों के मुखिया ने उसे काटकर एक बड़ा छेद बनाया, फिर एक लंबे बांस के अगले हिस्से में एक बड़ा चम्मच मजबूती से बांध दिया। अब बांस को जाली के भीतर घुसाकर थाल में रखे गुलाब जामुन को चमचे में भरकर धीरे-धीरे बाहर खींच लिया। इस प्रकार दो-चार लड़कों को तो गुलाब जामुन मिले मगर जिसे नहीं मिल पाये वह बाग़ी हो गया, उसने शिकायत कर दी। फिर सबकी पेशी आचार्य जी के सामने हुई और उन पर क्या गुजरी यह लम्बी कहानी है।

चोर-कर्म निपुण हरिया ने आलू खाने का एक अजीब तरीका ईजाद कर लिया था। भंडार के जिस कमरे में आलू भरे रहते थे, उसकी बाहरी दीवार में ईंटों से बनी हुई एक जाली थी। हरिया ने यह किया कि बांस के आगे एक नुकीली कील लगा दी। फिर बांस को जाली में से भीतर डालकर वह आलू में 'खच्च' से कील घुसा देता और आलू को बाहर खींच लाता। फिर जंगल में जाकर आलू को भूनकर खाता। **...क्रमशः**

साधनहीन मानव अभीष्ट कार्य को पूरा नहीं कर पाता है।

सण्डे हो या मण्डे, कभी ना खाओ अण्डे

विश्वभर के प्रसिद्ध डॉक्टरों एवं वैज्ञानिकों ने हाल ही में अण्डों पर विभिन्न प्रकार के परीक्षण एवं अन्वेषण किये हैं। इन्हीं तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट हो चुका है कि अण्डे व मांसाहार मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी न होकर हानिकारक होते हैं। उन्होंने शाकाहार को मानव स्वास्थ्य के लिए उत्तम बताया है। इसके विपरीत मांसाहार व अण्डों से उत्पन्न होने वाले रोगों की जानकारी भी दी। अण्डों के बाह्य कवच में 15000 से 30000 के लगभग सूक्ष्म छिद्र होते हैं, जिनमें अनेक प्रकार के रोगाणु प्रवेश कर जाते है, जो **सालमोनेला इन्फैक्शन तथा डी.डी.टी.** के अंशों के रूप में सामने आते हैं।

इसके अतिरिक्त अण्डों में कुछ भयंकर विजातीय तत्त्व जैसे - कॉलेस्ट्रोल, एवीडिन, लाइप्रोटीन्स, सैच्युरेटिड फैटी एसिड, माइक्रोग्लोब्यूनिस, एस.आर. फैक्शन भी पाये जाते हैं जिनके कारण हार्ट-अटैक, हाई ब्लड-प्रेशर, जोड़ों का दर्द, स्ट्रोक, पित्ताशय व मूत्राशय में पथरी, दाद, खाज, खुजली, एग्जिमा, लकवा, चर्म रोग, दमा, श्वेत कोढ़, बवासीर, गुर्दे खराब होना, अल्सर तथा पीलिया आदि सैकड़ों भयंकर रोग पैदा हो जाते हैं। इसकी प्रमाणिकता हेते स्पष्टीकरण निम्न हैं :-

1) अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान **(एम्स)** के पोषण विभाग के अध्यक्ष **डॉ. महेशचन्द्र गुप्त** के अनुसार -''अण्डा न ही खाया जाए तो अच्छा है क्योंकि हर दस में से नौ अण्डों में कैंसर पैदा करने वाले डी.डी.टी. के अंश पाये जाते हैं। अण्डों में डी.डी.टी. नामक विषैला पदार्थ रोग जनक होता है जो मनुष्य की नसों को जर-जर कर देता है। कैंसर जैसे असाध्य रोग को व्यर्थ ही अण्डे खाकर निमंत्रण देना कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं। ''

2) सन् 1985 में मेडिसिन में नोबेल पुरस्कार विजेता एवं हार्ट स्पेशलिस्ट **अमेरिकी डॉक्टर माइकल एस. ब्राउन** व डॉ. जोसेफ एल. गोल्डस्टीन ने अपने 10 वर्षो के अनुसंधान के आधार पर यह सिद्ध किया है कि अण्डे के पीले भाग में 'कॉलेस्ट्रोल' नामक विषैला तत्त्व बहुत अधिक मात्रा में पाया गया है जिस कारण अण्डे खाने से हार्ट अटैक, हाई ब्लड-प्रेशर, जोड़ों का दर्द, चर्म रोग, स्ट्रोक, पित्ताशय व मूत्राशय में पथरी आदि रोग पैदा होते हैं।

3) प्रसिद्ध डॉ. राबर्ट ग्रास ने सिद्ध किया है कि अण्डे की सफेदी में '**एवीडिन**' नामक विषैला तत्त्व पाया जाता है जिस कारण अण्डे खाने से खुजली, दाद, एग्जिमा, लकवा, चर्मरोग, चमड़ी का कैंसर, दमा, श्वेत कोढ़ आदि रोग पैदा होते हैं। ऐसे में अण्डा आपकी व आपके बच्चों की सेहत के लिए हानिकारक है।

डॉ. गंगाशरण आर्य

4) ब्रिटिश **हैल्थ मिनिस्टर मिसेज एडविना क्यूरी** ने चेतावनी दी है कि मुर्गियों की आंतों में व अण्डों के पीले भाग में '**सालमोनेला**' नामक छूतरोग के कीटाणु पाये गये हैं जिनके कारण अण्डे या मुर्गी का मांस खाने से उल्टी-दस्त, टायफाइड, फीवर व आंतों की सूजन जैसे भयंकर रोग पैदा हो जाते हैं और कभी-कभी तो मौत भी हो जाती है।

5) **डॉ. ई.वी. मैक्कॉलम** (ग्रेट मेडिकल अथोरिटी) ने सिद्ध किया है कि अण्डों में तुरन्त शक्ति देने वाले तत्त्व कार्बोहाईड्रेट्स व विटामिन-सी बिल्कुल भी नहीं है, इस कारण अण्डों से पेट में सड़न पैदा होती है।

6) **डॉ. पी. सी. सैन,** स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार लिखते हैं - 'चूंकि अण्डे, मछली, मांस में भोजन तन्तु बिल्कुल नहीं होते, इस कारण इनके सेवन से कब्ज, आंतों में कैंसर, बवासीर, गुर्दे खराब, अल्सर आदि रोग पैदा होते हैं।

7) मुम्बई के **हॉफकिन्स इन्स्टीट्यूट** ने चेतावनी दी है कि बच्चों को भूलकर भी अण्डे न खिलाए क्योंकि अण्डों से बच्चों में खांसी-जुकाम, दमा-नजला, गला खराब, पथरी, एलर्जी, आंतों में मवाद, हार्ट-अटैक, हाई ब्लड-प्रेशर, हाजमा खराब, पाचन शक्ति बरबाद, शारीरिक शक्ति व स्मरण शक्ति कमजोर, पीलिया आदि भयंकर रोग पैदा होते हैं। एक नये अनुसंधान में यह बात सामने आयी है कि बच्चों की पाचन शक्ति बहुत कमजोर होती है और अण्डे पचने में बहुत भारी, ऐसे में बच्चों को अण्डे खिलाने का मतलब उनकी जान जोखिम में डालने वाली बात है।

8) भारत सरकार द्वारा प्रकाशित '**हेल्थ बुलेटिन न. 23**' द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि 100 ग्राम (2 अण्डों) में 13.3 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है जबकि 100 ग्राम चनें में 22.5 ग्राम, 100 ग्राम मूंगफली में 31.5 ग्राम, 100 ग्राम मेथी में 26.2 ग्राम तथा 100 ग्राम सोयाबीन में 43.2 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है। इस प्रकार अण्डों की अपेक्षा सैकड़ों शाकाहारी खाद्य पदार्थों में प्रोटीन व अन्य पौष्टिक तत्त्व अधिक मात्रा में पाये जाते हैं।

अब फैसला आपको करना है कि आप अण्डे खिलाकर अपने बच्चों व स्वयं को भयंकर बीमारियों की सौगात देंगे या फिर शाकाहार अपनाकर दीर्घायु और तीक्ष्ण बुद्धि।

स्त्री का आभूषण शील और लज्जा है, बाह्य आभूषण उसकी शोभा नहीं बढ़ा सकते।

देश में बढ़ते दुष्कर्म और आडम्बर

देश में नित्य दिन-दिहाड़े हत्याएं, सामूहिक बलात्कार, लूटपाट, खाद्य पदार्थों में मिलावट, रिश्वतखोरी, चोर बाजारी, छल-कपट, झूठ-फरेब, द्वेष-भाव आदि घटनाएं घट रही है, इनके क्या कारण हैं? मेरे विचार से इसके तीन ही कारण है- अविद्या, आलस्य और प्रमाद विद्या का पठन-पाठन न के बराबर रह गया है। विद्या वेदों में है और वेद ईश्वरवाणी अर्थात् वेदों का ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में दिया, ताकि मनुष्य को परमाणु से लेकर ईश्वर पर्यन्त का ज्ञान हो। ज्ञान दो प्रकार का आध्यात्मिक ज्ञान और भौतिक ज्ञान।

आज भौतिक ज्ञान की ओर से मनुष्य आकर्षित हैं परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान का अभाव है और जितने आर्यसमाज के विद्वानों को छोड़ अन्य आध्यात्मिक गुरु आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार कर रहे हैं, उन्हें खुद को ही आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है। आडम्बर फैला रखा है, धन एकत्रित करने के लिए लोगों को प्रलोभन देकर जाल में फंसा रखा है। बिना आध्यात्मिक ज्ञान के न तो पूर्णरूप से ईश्वर के विषय में ज्ञान होता है और न ही जीवन में सुख प्राप्ति के साधनों का, उपायों का पता चलता है और न ही धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, सत्य-असत्य आदि का ज्ञान होता होता है। जिससे आध्यात्मिक ज्ञान न हो, व अविद्या है। पढ़-लिखकर अक्षरी ज्ञान या किसी भाषा को सीख लेना अलग बात है और विद्या पढ़कर विद्वान् होना अलग बात है।

अविद्या का कारण : वेदों के ज्ञाता विद्वानों का अभाव, महाभारत युद्ध से देश का पतन आरम्भ, क्योंकि सभी विद्वान्, शूरवीर योद्धा युद्ध में मारे गये और कुछ आयु पूरी होने पर नहीं रहे। विद्वानों के अभाव में अविद्या धीरे-धीरे बढ़ती गई, अज्ञानियों ने जो थोड़े-बहुत वेदज्ञान को जानते थे, उन्होंने वेद के मंत्रों का गलत भाष्य या वेद में अनर्गल बातों को बताकर वेदों के महत्त्व को कम कर दिया और लोगों को पाखण्ड में काल्पनिक कथा, कहानियाँ घड़कर धर्मविहीन कर दिया और उन पुस्तकों में उन बातों को लिख डाला जिनको करने की ईश्वर वेद में आज्ञा ही नहीं देता है और ईश्वर जिस काम को आज्ञा ही नहीं देता, वह कार्य हो रहे हैं, इसके दुष्परिणाम क्या निकल रहे हैं जरा सोचिए! मगर अपनी बुद्धि के साथ अन्य के साथ नहीं, क्योंकि ईश्वर ने प्रत्येक को स्वतंत्र विचारने के लिए बुद्धि दी है और सब का आत्मा पाप-पुण्य कर्म को भी जानता है, परन्तु आत्मा की बात तो चलायमान मन मानता नहीं। यदि मन पर नियंत्रण है तो मनुष्य पाप कर्मों में फंसता ही नहीं।

देश की वर्तमान भयावह स्थिति पर एक नजर डालें तो आज हमारे देश में अनाचार, दुराचार, पाखण्ड, बलात्कार, देहज प्रथा से भ्रूण हत्या, धन की हवन से लूटमार, कत्ल, उच्च पदवी पाने के लिए

नकली डिग्रियां, नकली ओबीसी, एस.सी. आदि के प्रमाण-पत्र, शिक्षा का गिरता स्तर, आरक्षण विनाशक है, चाहे जाति के नाम पर हो या आर्थिक दृष्टि से हो, कानून का सबके लिए समान न होना, कानून का पालन न करना, नैतिकता की शिक्षा का अभाव, चारित्रिक पतन, नशीले पदार्थों का सेवन (सरकार ने आय के लिए नशीले पदार्थों की बिक्री के परमिट जारी कर रखे हैं, इसके दुष्परिणामों पर किसी की जनर नहीं जाती, न तो जनता की और न ही सरकार की) देश के युवाओं को नशा मौत के मुँह में धकेल रहा है।

जब जहरीली शराब से, जहरीले भोजन से, नकली दवाइयों से, नकली दूध से सैकड़ों लोगों की मौत हो जाती है, तब जनता को थोड़ा-सा झटका लगता है और सरकारी तंत्र थोड़ी सी हरकत में आ जाता है। घटना घटने के बाद दूसरी घटना घट जाती है और घटती ही रहती है, परन्तु इनकी बिक्री कभी घटती नहीं देखी। आज मीडिया, समाचार-पत्र, पत्रिकायें इन विषयों पर प्रतिदिन प्रकाश डाल रही हैं परन्तु वही ढाक के तीन पात नजर आते हैं।

कभी यह देश **आध्यात्मिक क्षेत्र में गुरु** कहलाता था, विश्व हमारा अनुकरण किया करता था। शायद लम्बी परतन्त्रता के फलस्वरूप अपनी नैतिकता खो बैठे हैं हम, अपनी मान्यताओं से विमुख हो गये और बह गये पाश्चात्य के प्रवाह में। उनमें कुछ आदतें अच्छी भी हैं जिनका हमें अनुकरण करना चाहिए जैसे उनकी राष्ट्र के प्रति श्रद्धा, परिश्रम, समय की पाबन्दी, नए अन्वेषण, वैज्ञानिक प्रगति, अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण आदि गुणों हमने अनदेखी की और उनकी अनैतिकता वह उनके समाज में नैतिकता हो सकती है, परन्तु हमारी सभ्यता-संस्कृति में उसका स्थान नहीं है, जैसे वस्त्र होते हुए भी नंगापन (वस्त्र के अभाव में तो नंगापन हो सकता है) नशीले पदार्थों का सेवन, मांस, अण्डा आदि न खाने योग्य पदार्थों का सेवन।

शेष अगले पृष्ठ पर...

परिश्रम हर अच्छी वस्तु की तरह स्वयं ही अपना पुरस्कार है।

योगिराज श्रीकृष्ण व कर्ण संवाद

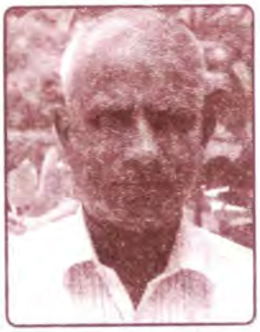

यशवीर आर्य

श्रीकृष्ण कर्ण से बोले- हे कर्ण ! तू वेद और शास्त्रों को जानता है। धर्म शास्त्रों में तेरी अच्छी गति है। तू धर्मानुसार पाण्डु का ही पुत्र है, इसलिए धर्मशास्त्र की मर्यादा के अनुसार तुझे दुर्योधन को छोड़कर पाण्डवों का ही साथ देना चाहिए। युधिष्ठिर आदि पाँचों तेरे भाई हैं। तेरी ननिहाल में हम वृष्णि और अन्धक कुल के लोग हैं। इन दोनो पक्ष के महत्त्व को समझ लें। अब तू मेरे साथ पाण्डव पक्ष में जाएगा तो युधिष्ठिर तुझे बड़े भाई के रूप में पहचानेंगे। पाँचों पाण्डव तुझसे छोटे होने के कारण अपने बड़े भाई के चरण छुएंगे। द्रौपदी के पुत्र और अभिमन्यु तेरे चरणों में मस्तक नवाएंगे। पाण्डव पक्ष में एकत्र हुए अन्य सभी लोग तेरे वंशवद होंगे। मैं स्वयं राजा के रूप में तेरा अभिषेक करूंगा। धर्मराज युधिष्ठिर तेरे पीछे श्वेत व्यजन लेकर खड़ा होगा। गदाधारी भीम चंवर डुलाएगा। गाण्डीवधारी अर्जुन सफेद घोड़ो वाले तेरे रथ को हांकेगा। नकुल, सहदेव, अभिमन्यु, पांचाल आदि सब और मैं भी तेरे पीछे-पीछे चलेंगे। तू पाँचों पाण्डवों के बीच में ऐसे ही शोभित होगा जैसे नक्षत्रों के बीच में चन्द्रमा।

इसके उत्तर में कर्ण ने कहा - "**हे केशव!** निस्सन्देह स्नेह और सौहार्द के वशीभूत होकर मेरे कल्याण की कामना से ही आपने ये बातें

...शेष अगले पृष्ठ पर

देश में बढ़ते दुष्कर्म और ...पिछले पृष्ठ का शेष

मांस हिंसक पशु (शेर आदि) खाते हैं और जो मांस खाते हैं, उनकी मानसिक प्रवृत्ति भी हिंसक होती है, उनको किसी की हत्या करने में कोई भय, शंका नही होती जिसे मनुष्य अपना समझ बैठा है वास्तव में वह भी उसका अपना नहीं है, अन्य पदार्थो की बात तो अलग रही, यह शरीर भी अपना नहीं है। यह भी परम पिता परमात्मा द्वारा जीवात्मा को कर्म करने और पूर्वजन्मों में किये गये कर्मो का फल भोगने के लिए दिया है, हम इसकी रक्षा नहीं कर पाते और इसे अपना-अपना मानते है परन्तु इसे निरोग नहीं रख पाते। उन वस्तुओं और पदार्थो का सेवन करते हं जो इसके लिए हानिकारक हैं और कहीं पर भोजन का निमंत्रण हो तो वहाँ इतना खा लेते हैं जो पेट की सहनशीलता से अधिक होता है और दूसरे जब नहीं खाया जाता तो उसे कचरे के डिब्बे में डाल देते हैं। हमारी मानव नहीं बंदर प्रवृत्ति है। बन्दर जितना खाया-खाया बाकी को नष्ट करके फेंक देता है और बन्दर की एक और प्रवृत्ति होती है, लूटकर खाना। ऐसी प्रवृत्ति के कुछ लोग हैं जो दूसरों के के धन को छीन लेते हैं। छीनने की बात तो अलग है, परमपिता परमेश्वर जिसने जीवों के उपयोग के लिए यह सब दान में दे रखा है, उसका सदुपयोग करें।

इन सबका मुख्य कारण वेदविद्या का अभाव। अतः मनुष्य यदि वेद का पठन-पाठन छोड़ दे तो पथभ्रष्ट हो जाता है और आस्तिक के स्थान पर नास्तिक हो जाता है। जब महर्षि दयानन्द जी ने देश की दशा को देखा तो इसका कारण विद्या का अभाव और अविद्या, पाखण्ड का बोलबाला पाया।

महर्षि दयानन्द देश से क्या सारे विश्व से अविद्या-पाखण्ड को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे और वह केवल वेदविद्या से ही सम्भव है, इसीलिए महर्षि ने कहा, पुनः वेदों की ओर लौट आओ। महर्षि की मान्यता है कि जिस देश का आधार वेद न हो वह देश चहुँमुखी उन्नति नहीं कर सकता। देश की जनता में नैतिकता का पतन, चरित्रहीनता, वेदविद्या के अभाव में घर कर गई। काफी हद तक देश की लोकतांत्रिक प्रणाली भी सामाजिक पतन के लिए उत्तरदायी है। राजनैतिक वोट व्यवस्था ने समाज को विभिन्न वर्गो में विभाजित कर दिया है जिसकी देश का सामाजिक ढांचा चूर-चूर हो गया। सत्ता हथियाने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद वाली नीति का प्रचलन हो गया। समाज के इतने टुकड़े हो गये कि उनको जोड़ पाना किसी फेवीकोल की ताकत से बाहर है।

सत्ता प्राप्ति के लिए सभी आपराधिक तरीके धन, बल आदि का प्रयोग खुलेआम हो रहा है। क्या जो देश की वर्तमान परिस्थिति है उसको देखकर ऐसा लगता है कि इस देश में स्वराज्य है। इतनी भयावह स्थिति तो अंग्रेजों के राज्य में भी लोग नहीं बताते, जिन्होंने उनका राज्य देखा है। माना कि देश की सत्ता को न छोड़ने के लिए उन्होंने जनता पर अत्याचार किये वे कम नहीं है परन्तु जिन्होंने अपने प्राणों की आहूति देश की स्वतंत्रता के लिए दी थी। उन्होंने तो कभी स्वप्नों में भी नहीं सोचा होगा कि देश पर ऐसे लुटेरों का राज्य हो जाएगा जिन्हें देश से नहीं केवल धन से प्यार है। सत्ता में सभी लोग ऐसे नहीं होते परन्तु जब अधिकता ऐसों की होती है तो अच्छों की गिनती नहीं होती, उन्हीं लुटेरों की खातिर उनकी भी छवि खराब होती है। देश बड़े नाजुक दौर से गुजर रहा है, यह सबके लिए विचारणीय विषय है।

- लालचन्द चौहान,
म. न. 591 / 12, पंचकूला, हरियाणा

अपने हित के लिए दूसरों का हित करना भी आवश्यक है।

कहीं हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि धर्मशास्त्र की मर्यादा के अनुसार मैं पाण्डु का ही पुत्र हूँ, किन्तु जब पैदा होते ही माता कुन्ती ने लोक-लाजवश मुझे त्याग दिया था, तब अधिरथ सूत मुझे उठाकर लाये थे और उनकी पत्नी राधा ने अपना दूध पिलाकर मुझे पाला था और मेरा मल-मूत्र साफ किया था। मैं उस राधा के उपकार को कैसे भूल सकता हूँ? जिस अधिरथ ने शास्त्रों के अनुसार मेरे समस्त संस्कार करवाये है और जिसे मैं अपना पिता मानता हूँ, जिसने युवा होने पर मेरा विवाह करवाया और अब मेरे पुत्र और पौत्र हैं जिनसे मैं आत्मीयता के सूत्र में बंधा हूँ, हे कृष्ण समस्त पृथ्वी के शासन और अपार सोने के भण्डार से भी मैं इन सम्बन्धों को नहीं झुठला सकता।

इसके अतिरिक्त हे कृष्ण! जिस दुर्योधन के कारण मैंने 13 वर्ष तक निष्कटंक राज्य-सुख भोगा है और जिस दुर्योधन ने मेरे ही भरोसे पर पाण्डवों से यह युद्धा रोपा है और अर्जुन से लोहा लेने के लिए मुझे चुना है, मैं मृत्यु भय से या किसी प्रलोभन के कारण उस दुर्योधन के साथ विश्वासघात करने को तैयार नहीं हूँ। इसलिए हे जनार्दन! मेरे इस जन्म के रहस्य और पाण्डवों का बड़ा भाई होने के भेद को आप अपने तक ही गुप्त रखें। इसी में सबका भला है। यदि धर्मात्मा युधिष्ठिर को पता लगेगा कि मैं कुन्ती का ज्येष्ठ पुत्र हूँ तो वह राज्य लेना स्वीकार नहीं करेगा और राज्य मुझे सौंप देगा। युधिष्ठिर द्वारा दिये गये राज्य को दुर्योधन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मैं दुर्योधन को दे दूँगा। तब महाभारत का यह सारा युद्ध ही व्यर्थ हो जाएगा इसलिए मेरी कामना यही है कि जिसका नेता श्रीकृष्ण और यौद्धा अर्जुन है, वह राजा युधिष्ठिर ही सदा राजा बने रहें।''

कण के लोकोत्तर चरित्र की यह कैसी मनोरम झांकी है। अब जरा दुर्योधन के चरित्र ककी भी **एक झाँकी** देखिए :-

''कर्ण के सेनापति बनने पर अश्वत्थामा ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह उसके सेनापतित्व में शस्त्र नहीं उठाएगा। जब युद्ध में अर्जुन ने कर्ण को समाप्त कर दिया, तब अश्वत्थामा भाव-विभोर हो दुर्योधन के पास पहुँचा और बोला- राजन! जिस कर्ण पर तुमने पाण्डवों को मारने की आशा बांध रखी थी, वह उनका बाल भी बांका नहीं कर सका। अब तुम मेरा जौहर देखना। मैं एक दिन में ही 'निष्पाण्डवा मेदिनी' इस धरती से पाण्डवों को समाप्त कर दूंगा।''

जहाँ तक राजनीति का सम्बन्ध है, दुर्योधन को अश्वत्थामा की इस बात को परखना और उसका लाभ उठाना चाहिए था परन्तु दुर्योधन की नैतिकता देखिए। उसने कहा -'गुरुपुत्र! पहले तुमने यह प्रतिज्ञा की कि जब तक कर्ण जीवित है, तब तक शस्त्र नहीं उठाऊंगा। अब तुम यह प्रतिज्ञा और कर लो कि जब तक दुर्योधन नहीं मर जाता, तब तक शस्त्र नहीं उठाऊंगा। मेरी दृष्टि में तुम और अर्जुन एक समान हो। एक ने मेरे मित्र कर्ण का भौतिक शरीर समाप्त किया है और तुम उसके मरने पर कटु वचन कहकर उसके यशरूपी शरीर को नष्ट कर रहे हो।

जैसे मैं अपने मित्र के शत्रु अर्जुन द्वारा दी हुई राज्य-लक्ष्मी को स्वीकार नहीं कर सकता, वैसे ही तुम्हारे शौर्य से लाभ उठाना भी मैं नीच कर्म समझता हूँ।' आज के राजनीतिज्ञ में ऐसी नैतिकता की बात स्वप्न में भी नहीं सोच सकते।

ऐसे ही जब भीम ने दुर्योधन से युद्ध करते हुए, युद्ध के नियमों के विपरीत कमर के नीचे वार करके उसकी जांघे चूर-चूर कर दीं, तब बलराम ने क्रुद्ध होकर कहा -'**अब इस अनर्थकारी भीम का वध मैं करुंगा।**' तब अर्धमृत अवस्था में केवल अपनी भुजाओं के सहारे किसी प्रकार भूमि पर घिसटते हुए दुर्योधन ने कहा -'हे बलराम ! अब आप ऐसा करके पाण्डवों के रंग में भंग मत डालिए। कुरुकुल के दावानल को समाप्त करने वाला पाण्डव-कुल का एक मेध सही-सलामत रहे। अब तो वैर और विग्रह की जड़ मैं और मेरे सब साथी समाप्त हो गये। यदि मुझ पर भीम के प्रहार को आप नियम विरुद्ध समझते हैं तो मेरी वीरता के लिए आपका इतना प्रमाण पत्र ही काफी है कि छल से हराकर भी भीम मुझे जीत नहीं सका।'

जब दुर्योधन के क्षत-विक्षत होने का समाचार सुनकर उसकी पत्नी भानुमति आयी और अपने पति की मरण-वेला निकट जानकर करूण विलाप करने लगी, तब दुर्योधन की वीर वाणी सुनिये -

''भीम के गदा प्रहारों से मेरी भौंहे विदीर्ण हो गई हैं। छाती पर इतने प्रहार लगे हैं कि अब मुझे हीरे-मोतियों के हारों की आवश्यकता नहीं रही। दोनों भुजाऐं भी स्थान-स्थान पर घावों के कारण सोने के बाजूबन्दों से भी अधिक शोभायमान हो रही हैं। हे क्षत्राणी ! तेरा पति युद्ध में पीठ दिखाकर नहीं मर रहा है, फिर तू रोती क्यों है? रोने की बात तो तब होती, जब मैंने युद्ध में पीठ दिखाई होती।''

कर्ण और दुर्योधन के विषय में यह नया प्रकाश है और इस बात का प्रतीक है कि पतित से पतित व्यक्ति में भी कुछ ऐसे गुण छिपे होते हैं, जो प्राय: दुनिया की आँखों से ओझल होते हैं।

संकलन : **यशवीर आर्य,**
वेद प्रचार विभाग, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

परोपकार में लगे हुए सज्जनों की प्रवृत्ति पीड़ा के समय भी कल्याणमयी होती है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार 10+2 तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2008** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, जो निम्न प्रकार है -

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

अश्वारोहण (घुड़सवारी) : इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण) : इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु) : गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी. सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.) : सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन. एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारा गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु भक्त अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जहाँ रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी 'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस' कोर्स कराया जाता है।।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

शून्य लागत प्राकृतिक खेती : आचार्य देवव्रत जी की प्रेरणा से गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा पिछले 12 वर्षों से 180 एकड़ के **जैविक कृषि फार्म** पर '**शून्य लागत प्राकृतिक खेती**' की जा रही है।

इनके अतिरिक्त **स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला (नर्सरी)** भी है। नवनिर्मित आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र है जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं '**गुरुकुल-दर्शन**' मासिक पत्र के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

वृक्ष, सरोवर, सज्जन और मेघ - ये चारों परमार्थ हेतु देह धारण करते हैं।

आर्यवीर योग एवं जीवन-निर्माण शिविर की झलकियाँ

गुरुकुल–गतिविधियाँ

जेईई-एडवांस में उत्तीर्ण छात्रों के साथ महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व अन्य शिक्षकगण

गुरुकुल भ्रमण पर आए हरियाणा के लोकायुक्त एन. के. अग्रवाल के साथ प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, सतपाल जी

शूटिंग चैम्पियनशिप में हरियाणा में प्रथम स्थान पाने वाले छात्र के साथ प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व कोच बलबीर सिंह जी

अंतर-सदन प्रतियोगिता में प्रथम आए छात्रों को पुरस्कृत करते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी व निदेशक तथा प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता जी

आईएसीआर के वैज्ञानिकों को जैविक कृषि और जैविक खाद के बारे में जानकारी देते हुए प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह व डॉ. वजीर सिंह जी

गुरुकुल द्वारा प्रशिक्षित की गई आर्य वीरांगनाओं के साथ प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, भोपाल सिंह आर्य, यशवीर आर्य, समरपाल आर्य, जयपाल आर्य व अन्य महानुभाव

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244
Postel Regn. No. HR/KKR/181/2015-2017

स्वामी– गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री कुलवंत सिंह सैनी द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड, निकट डी.एन. कालेज, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से मुद्रित एवं गुरुकु कुरुक्षेत्र, (निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी), कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक –कुलवंत सिंह सै

मूल्य-15रु एक प्रति (150रु वार्षिक)

प्रतिष्